thearyasamaj.org

ओ३म्

पाक्षिक परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वर्ष - ५७ अंक - १ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र जनवरी (प्रथम) २०१५

महर्षि दयानन्द सरस्वती

thearyasamaj.org

ऋषि मेले की झलकियाँ

thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५७ अंक : १
दयानन्दाब्द: १९०
विक्रम संवत्: पौष शुक्ल, २०७१
कलि संवत्: ५११५
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११५

सम्पादक
प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-
भारत में
वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

विदेश में
वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षाः,
सत्यव्रता रहितमानमलापहाराः।
संसारदुःखदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकाराः।।

RNI. No. ३९५९/५९

परोपकारी

जनवरी प्रथम २०१५

अनुक्रम

१. न्याय पीड़ित को मिलना चाहिए	सम्पादकीय	०४
२. समाधिभावनार्थः क्लेशतनूकरणार्थश्च..	स्वामी विष्वङ्	०६
३. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	१३
४. लौहपुरुष स्वामी स्वतन्त्रानन्द के....	स्वामी सदानन्द	१६
५. श्रद्धा, तर्क और आस्था	वीरेन्द्र कुमार	१७
६. वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन		२२
७. पुस्तक-समीक्षा	देवमुनि	२४
८. शिविरार्थी का मनोगत	नलिनी माधव	२५
९. दक्षिण में बलिदानी परम्परा के...	डॉ. नयनकुमार	२७
१०. ऊमर काव्य	ऊमरदान लालस	२९
११. जिज्ञासा समाधान-७८	आचार्य सोमदेव	३५
१२. स्तुता मया वरदा वेदमाता	डॉ. धर्मवीर	३८
१३. संस्था-समाचार		३९
१४. आर्यजगत् के समाचार		४२

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

thearyasamaj.org

न्याय पीड़ित को मिलना चाहिए

एक समय पंजाब के डेरों गुरुद्वारों, पुजारियों का वर्चस्व था, वे उसका मनमाना उपयोग करते थे। उसके विरोध में आन्दोलन किया गया। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने उस आन्दोलन का समर्थन किया, वे जेल गये। उस आन्दोलन के परिणामस्वरूप गुरुद्वारा कानून बना, सब गुरुद्वारे सिखों के आधीन आ गये। गुरुद्वारों का सिखों के आधीन आना तो ठीक है परन्तु आगे चलकर पंजाब में इस कानून का इतना दुरुपयोग हुआ, स्वर्ण मन्दिर में जो मूर्तियाँ स्थापित थी उन्हें भी उखाड़ फेंका, इतना ही नहीं हिन्दुओं के मन्दिर भी सिखों ने कब्जा लिए, जिन स्थानों पर हिन्दू-सिख मिलकर उपासना करते थे उनके उपासना स्थल पृथक्-पृथक् होने लगे गुरुनानक के बेटे बाबा श्रीचन्द ने उदासी पन्थ चलाया था। उदासी लोग संस्कृत का पठन-पाठन करने वाले विद्वान् होते थे, इनके डेरों में बड़ी-बड़ी पाठशालायें चलती थी। आर्यसमाज के महापुरुष स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी महाराज तथा वैदिक विद्वान् पं. राजाराम शास्त्री इन अखाड़ों की देन थे। सिखों ने इन डेरों पर भी अधिकार करके उनको भी समाप्त कर दिया। आगे चलकर अकाली संस्कृत हिन्दी के इतने विरोधी बने की इन्होंने अपने पाठ्यक्रम से हिन्दी संस्कृत को समाप्त कर दिया। आज आप पंजाब के बाजार में खड़े हों तो लगेगा हरियाणा के बगल में ही कोई विदेश है जहाँ आप को अपनी राष्ट्रभाषा में कहीं कुछ लिखा दिखाई नहीं देगा। अलगाववादियों ने इस बात को इतना बढ़ावा दिया, अमृतसर में सिखों के जुलूस में नारे लगे 'गो का मांस खायेंगे हिन्दू नहीं अखायेंगे'। आज भी हिन्दू सिख एकता को स्वीकार करने वाले मानते हैं पंजाब के घरों में एक ही घर में एक भाई सिख होता था केशधारी और मोना सहजधारी, आज भी हिन्दू-सिखों के बीच में विवाह करने में कोई कठिनाई नहीं होती क्योंकि जीवन शैली में रहन-सहन, खान-पान, वेशभूषा, सांस्कृतिक, सामाजिक परम्परा एक जैसी मिलती है। हिन्दू-सिखों के अलगाव की जिस नीति को अंग्रेजों ने स्वीकार किया और चलाया उसे अलगाववादियों ने बलपूर्वक आगे बढ़ाया और हिन्दू सिखों के मध्य खाई को चौड़ा करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। अंग्रेज ने देश के विभाजन के लिए इस कूटनीति का सहारा लिया, बाद में राजनीति कर लोगों ने स्वार्थपूर्ति के लिए इसे आगे बढ़ाया। पिछली सरकार की विभाजन की इस खाई को वर्तमान में भाजपा ने मूर्खतावश बढ़चढ़कर इसे कार्य का श्रेय लूटने की सीमा तक सहयोग किया। पिछले दिनों संसद में कांग्रेस की सरकार के समय सिखों के लिए नये विवाह कानून को मान्यता दी, कहने को तो इसे सिखों के हित में बनाया परन्तु हम भूल गये कि इस कानून से स्थायी रूप से सिखों को हिन्दुओं से पृथक् स्वीकार कर लिया गया। जैसे गुरुद्वारा कानून दुरुपयोग से हिन्दुओं को बांटने का कारण बना उसी प्रकार आनन्द कारज कानून से हमने हिन्दू-सिखों की सामाजिक एकता को तोड़ने का कार्य किया है।

कुछ लोग समझ सकते हैं कि आर्यसमाजियों के लिये भी कानून बना था परन्तु उसका स्वरूप हिन्दुओं की बुराई को दूर करना था, पृथक् करना नहीं वह कानून बिल्कुल बालविवाह निषेध जैसा कानून था जो सामाजिक सुधारों को मान्यता देता, वह कानून जन्मगत, जातपात, ऊँचनीच के भेदभाव को समाप्त करता था और वर्तमान हिन्दू विवाह अधिनियम व्यापक हो जाने से उसकी आवश्यकता भी नहीं रह गई है। परन्तु सिखों के लिये नया विवाह कानून स्वीकार करके हिन्दू सिखों के पृथकता को पूर्णरूप से स्वीकार करने का प्रयास किया गया है। इसी प्रकार जाने-अनजाने १९८४ के दंगों की चर्चा करते हुए हिन्दू-सिखों के बीच असन्तुलन और अन्याय कर रहे हैं। जब हम किसी घटना की चर्चा पूरे प्रकरण के साथ न करके बीच से करते हैं तो तब हम या तो कुछ भूल गये होते हैं अथवा कुछ छिपाना चाहते हैं। जब मुसलमान, यूरोपीय लोग, अमेरिकी मानव अधिकारवादी, भारत के स्वार्थी धर्मनिरपेक्षतावादी गुजरात के दंगों पर बड़े जोर से चीखते-चिल्लाते हैं, मोदी को फांसी देने की बात करते हैं, तब वे दंगे का प्रारम्भ गुजरात में फैले दंगों से करते हैं, उसका प्रारम्भ गोधरा से नहीं करते। न्याय की बात है गुजरात के दंगों की चर्चा जब भी प्रारम्भ की जाये गोधरा से की जानी चाहिए। गोधरा के दंगों में और गोधरा के पश्चात् गुजरात के दंगों में एक मौलिक अन्तर है जिसे हम आँखे होते हुए भी देखना नहीं चाहते, वह अन्तर है गोधरा का दंगा सुनियोजित था, बाहर से पेट्रोल लाकर छिड़का गया, दरवाजों को जान-बूझकर बन्द किया गया जिससे कोई व्यक्ति अपना बचाव करना चाहे तो भी न कर सके, इस दुर्घटना के समाचार नेताओं, प्रशासनिक अधिकारियों, सत्ताधारी पार्टी के सांसदों तक पहुँचे, तो उन्होंने ऐसी प्रतिक्रिया की मानो यह घटना हिन्दुओं के साथ घटी है यह कोई सामाजिक, राष्ट्रीय महत्त्व की दुर्घटना नहीं है। इसकी

thearyasamaj.org

प्रतिक्रिया में जब गुजरात में दंगे भड़के तो उसे सरकार द्वारा प्रायोजित माना गया। गुजरात के दंगे प्रतिक्रिया के रूप में थे और गोधरा काण्ड सुनियोजित षड़यन्त्र था। गुजरात के दंगों की चर्चा करते हुए योजनापूर्वक किये गये षड़यन्त्र की चर्चा बिना किये गुजरात के दंगों को सुनियोजित बताना यह भी एक षड़यन्त्र है। इस षड़यन्त्र का उद्देश्य गोधरा के अपराधियों को बचाना तथा उसके विपरीत हिन्दू समाज और मोदी को अपराधी सिद्ध करना। आज जब मोदी प्रधानमन्त्री बन गये तब उस प्रसंग की चर्चा उठाने की क्या आवश्यकता है? जैसे गुजरात का प्रसंग है वैसा ही प्रसंग पंजाब का है, वही अपराध हम पंजाब के हिन्दुओं के साथ कर रहे हैं, अतः इस प्रसंग को भूमिका के रूप में रखना आवश्यक है।

आजकल १९८४ के दंगों के शहीदों के लिये न्याय माँगा जाता है। न्याय माँगना चाहिए, हजारों निर्दोष लोगों को मारा गया, जलाया गया, बेघर किया गया, इसके अपराधियों को दण्ड मिलना चाहिए। पीड़ितों को न्याय मिलना चाहिए। सिखों द्वारा दंगा करने वालों पर कार्यवाही की माँग करना उचित है। सिख संगठन अमेरिका के राष्ट्रपति ओबामा से माँग करते हैं, जबतक १९८४ के दंगा पीड़ितों को न्याय न मिले। लगता है सिख आज भी ओबामा से न्याय की आशा करते हैं, भारत सरकार से नहीं। पंजाब में आतंक का उग्र दौर चला तब सिख भी पीडित हुए हिन्दू भी। आतंकवादियों में सिख अधिक थे, उन्होंने हिन्दू-सिखों में द्वेष उत्पन्न करके पंजाब के हिन्दुओं की बड़ी संख्या में हत्या की। हिन्दुओं की महिलाओं के साथ दुराचार किये। हिन्दुओं की दुकान-मकानों को लूटा गया, जलाया गया। जिस इन्दिरा गाँधी ने राजनीति के दांव के रूप में भिण्डरावाला को पैदा किया, उसने पंजाब को आतंक की आग में झौंक दिया और पंजाब में आतंक का दौर चल पड़ा, आतंकवादी यह भी भूल गये कौन हिन्दू है, कौन सिख, कौन अकाली है और कौन कांग्रेस। उन्होंने हत्या करके समाज में अपना प्रभाव स्थापित करने का कार्य किया। उन्होंने गुरुद्वारे पर माथा टेकने गई मास्टर तारासिंह की बेटी की ही गोली मारकर हत्या कर दी। ऐसी परिस्थिति में गोला, बारूद आतंकियों का गढ़ बने स्वर्ण मन्दिर में इन्दिरा गाँधी को सेना की कार्यवाही करने के लिए बाध्य होना पड़ा, आतंकियों के नष्ट करने, पंजाब सरकार पुलिस तथा सेना ने भरसक प्रयास किया और पंजाब के आतंक पर काबू पाया जा सका, आतंक प्रभावित संकीर्ण मानसिकता के चलते प्रधानमन्त्री इन्दिरा गाँधी की हत्या कर दी गई। इन्दिरा गाँधी की हत्या के परिणामस्वरूप १९८४ के दंगे भड़के, हजारों सिखों को मारा गया, जलाया गया, उनकी सम्पत्ति नष्ट की गई और भारतीय इतिहास में सामाजिक संघर्ष की दुर्भाग्यपूर्ण घटना घटी। इसके दोषियों को दण्ड मिलना चाहिए और पीड़ितों को न्याय भी मिलना चाहिए।

इस घटना में आपत्ति की बात है १९८४ के दंगों की चर्चा करते हुए अधूरी चर्चा करते हैं। हम या तो कुछ छिपाना चाहते हैं या कुछ भूल जाते हैं। १९८४ के दंगों की चर्चा, पत्र-पत्रिकाओं में होती है, सामाजिक मञ्चों पर होती है, अन्तरराष्ट्रीय मञ्च पर होती है, न्यायालयों में होती है, सिखों के साथ न्याय की पुकार लगाई जाती है, न्याय के लिए प्रयास करना न्याय दिलाना अच्छी बात है परन्तु हम भूल जाते हैं, न्याय के सामने चेहरा नहीं होता, यह मुसलमान है, यह सिख है, यह हिन्दू है, इसके साथ न्याय करना है। न्याय के सामने अपराध होता है, न्याय के सामने अपराधी होता है, न्याय का उद्देश्य अपराध की विवेचना कर अपराधी को दण्ड देना होता है। हम १९८४ के दंगों की चर्चा करते हैं, हम सिखों के साथ न्याय की बात करते हैं, पीड़ितों के साथ नहीं करते। गुजरात के दंगों की भाँति, आतंकवाद, इन्दिरा की हत्या, पंजाब में आतंकवाद ये सुनियोजित षड़यन्त्र है, जबकि १९८४ के सिख विरोधी दंगे प्रधानमन्त्री इन्दिरा गाँधी की हत्या की प्रतिक्रिया में उत्पन्न आवेश और गुस्से का परिणाम है। १९८४ के दंगे कोई सुनियोजित कार्य नहीं था। इसमें पुलिस, सेना, सरकार की मार्गदर्शक भूमिका नहीं है। सरकार और प्रशासन दंगों को रोकने में समय पर उचित कार्यवाही की कमी निश्चित रूप से हो सकती है। इसलिए १९८४ के दंगों पर न्याय करते हुए पंजाब में मारे गये हिन्दू-सिखों को क्यों हम भूल जाते हैं। सिखों के साथ-साथ आतंक में मारे गये गैर सिखों को भी न्याय मिलना चाहिए, उन्हें भी क्षतिपूर्ति दी जानी चाहिए, उनके अपराधियों को भी दण्डित किया जाना चाहिए। यदि इन सिख विरोधी दंगों को पूरे प्रकरण के साथ नहीं देखेंगे तो पीड़ित हिन्दू समाज को ही अपराधी भी बनायेंगे, उन्हें न्याय के स्थान पर इतिहास दण्डित करेगा, यह अनुचित है। यह सन्तोष की बात है आज बादल को भी लगने लगा है सिखों के साथ जिन हिन्दुओं की भी हानि हुई है उनकी भी क्षतिपूर्ति की जानी चाहिए। पंजाब सरकार की पूर्व मन्त्री लक्ष्मीकान्ता चावला ने इस न्याय संगत पक्ष को बार-बार उठाया परन्तु उस समय ध्यान नहीं दिया, आज बादल मुख्यमन्त्री के रूप में अब इस बात को उठा रहे हैं तब निश्चित रूप से इस विषय में विचार किया जायेगा ऐसी आशा है। क्योंकि शासन का कार्य प्रजाओं के कष्टों का निवारण करना है-

क्षत्रियाणां परोधर्मः प्रजानामेव पालनम्। (मनुस्मृति)

- धर्मवीर

thearyasamaj.org

समाधिभावनार्थः क्लेशतनूकरणार्थश्च-२

- स्वामी विष्वङ्

साधन पाद को प्रारम्भ करते हुए महर्षि पतञ्जलि ने चंचल मन वाले साधारण मनुष्यों (जिन्होंने मोक्ष को लक्ष्य बना कर मन को एकाग्र करने के लिए पुरुषार्थ प्रारम्भ नहीं किया) के लिए भी योग का उपदेश किया है। ऋषि ने ऐसी क्रियाओं को करने के लिए संकेत किया है जिनको करते हुए मनुष्य पाप कर्मों से बच सकते हैं। वे क्रियाएँ हैं- तप, स्वाध्याय और ईश्वरप्रणिधान। इन तीनों क्रियाओं को ऋषि ने '**क्रियायोग**' नाम से परिभाषित किया है। इन तीनों क्रियाओं का यह सामूहिक नाम (संज्ञा) है। क्रियायोग कहते ही तप, स्वाध्याय, ईश्वरप्रणिधान का ग्रहण होता है। सम्पूर्ण योगशास्त्र में जब कभी क्रियायोग की चर्चा आयेगी तब इन तीनों क्रियाओं का ग्रहण किया जायेगा। महर्षि वेदव्यास प्रस्तुत सूत्र की भूमिका के रूप में लिखते हैं कि '**स हि क्रियायोगः**' अर्थात् वह क्रियायोग ही चंचल मन वाले मनुष्य को विशेष फल देने वाला है। अभिप्राय यह है कि चंचल मन वाले मनुष्य की चंचलता को छुड़ाकर एकाग्रता की ओर ले जाता है और ऐसे फलों को प्रदान करता है, जिससे मनुष्य कृतकृत्य बनने के सामर्थ्य को प्राप्त कर लेता है। यह छोटी-मोटी उपलब्धि नहीं है। एक साधारण से साधारण मनुष्य को (जो चंचलता से ओत-प्रोत है, ऐसे को) मोक्ष की ओर अग्रसर कर देता है। ऐसे महत्त्वपूर्ण साधन को '**क्रियायोग**' नाम से कहा जा रहा है। यदि किसी के मन में यह बात आ जाये कि क्रियायोग क्यों करना चाहिए? इसका समाधान सूत्रकार करते हैं कि '**समाधिभावनार्थः**' अर्थात् समाधि लगाने के लिए क्रियायोग करना चाहिए और '**क्लेशतनूकरणार्थश्च**' अविद्या आदि पाञ्चों क्लेशों को तनू (सूक्ष्म या कमजोर) करने के लिए करना चाहिए।

महर्षि वेदव्यास प्रस्तुत सूत्र की व्याख्या करते हुए लिखते हैं कि -

स ह्यासेव्यमानः समाधिं भावयति क्लेशांश्च प्रतनूकरोति।

अर्थात् सः= वह क्रियायोग हि= निश्चय से आसेव्यमानः सेवन किया जाता हुआ समाधिम्= सम्प्रज्ञात समाधि को भावयति= सिद्ध कराता है। यहाँ पर महर्षि ने '**आसेव्यमानः**' शब्द का प्रयोग किया है। व्याकरण की दृष्टि से आङ् पूर्वक 'सेव' धातु का प्रयोग है और यह प्रयोग क्रिया के निरन्तर (बार-बार) करने अर्थ में होता है। अभिप्राय यह है कि तप, स्वाध्याय, ईश्वरप्रणिधान रूपी क्रियायोग को बार-बार करते रहना है। उसकी निरन्तरता से ही साधक समाधि तक पहुँच सकता है। क्रियायोग का अभ्यास लम्बे काल तक, निरन्तर, संयमपूर्वक, विद्यापूर्वक और श्रद्धापूर्वक करता हुआ ही साधक समाधि लगाने में समर्थ हो पाता है। समाधि लगाना सरल कार्य नहीं है क्योंकि मनुष्य परम्परा (अनादिकाल) से कर्म करता हुआ आ रहा है। मनुष्य अविद्या से युक्त होकर कर्म करता है। जो कर्म अविद्या से युक्त होकर किये जाते हैं वे कर्म कभी भी समाधि को प्राप्त नहीं करा सकते हैं। इसलिए तप, स्वाध्याय, ईश्वरप्रणिधान के माध्यम से कर्मों को शुद्ध किया जाता है जिससे क्लेश धीरे-धीरे कमजोर होते रहते हैं और जैसे-जैसे क्लेश कमजोर होते हैं वैसे-वैसे कर्म शुद्ध होते हैं। इस प्रकार से क्रियायोग साधक को समाधि तक ले जाता है। इसलिए महर्षि ने '**आसेव्यमानः**' शब्द का प्रयोग किया है। इससे स्पष्ट होता है कि महर्षि ने जन्म जन्मान्तरों से चले आ रहे अशुद्ध कर्मों व क्लेशों और उनके संस्कारों को कमजोर करने के लिए बार-बार अभ्यास करने के लिए '**आसेव्यमानः**' का संकेत किया है।

क्रियायोग को करने का दूसरा प्रयोजन बताते हुए महर्षि कहते हैं- '**क्लेशांच प्रतनूकरोति**' अर्थात् क्लेशान् च= और अविद्या आदि पाञ्चों क्लेशों को प्रतनूकरोति= बिल्कुल कमजोर या सूक्ष्म कर देता है। क्रियायोग पाञ्चों क्लेशों (अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेश) को कमजोर कर देता है। जिस प्रकार से मनुष्य परम्परा (अनादि काल) से कर्मों को करता हुआ आ रहा है उसी प्रकार से ये क्लेश भी परम्परा से मनुष्य के साथ चले आ रहे हैं। क्लेश कभी मोक्ष वाले कर्मों को करने नहीं देते हैं। क्लेशों से युक्त होकर मनुष्य सदा उन्हीं कर्मों को करता रहता है, जो बार-बार जन्म व मृत्यु को प्राप्त कराते रहते हैं। इसलिए साधक बार-बार क्रियायोग का अभ्यास कर-करके क्लेशों को कमजोर बना देता है। जब क्लेश कमजोर हो जाते हैं तब कर्म मोक्ष के लिए समर्थ होते हैं। जैसे-जैसे मोक्ष वाले कर्म बढ़ते जाते हैं वैसे-वैसे साधक समाधि की ओर

thearyasamaj.org

अग्रसर होता रहता है और जैसे-जैसे समाधि की ओर बढ़ता है वैसे-वैसे क्लेश और अधिक कमजोर (सूक्ष्म) होते रहते हैं। जिससे साधक और अधिक समाधि की ओर बढ़ता है। इसके लिए तप कितना करना होगा, इसका मूल्यांकन करके साधक को देखना चाहिए। तप को सूक्ष्मता (शरीर के साथ-साथ वाचनिक और मानसिक रूप) से करना प्रारम्भ कर देना चाहिए। तप को सूक्ष्मता से करने के लिए विविध मोक्ष शास्त्रों का गहराई से स्वाध्याय करना होगा। तभी साधक तप को अच्छी प्रकार से कर पायेगा। जहाँ स्वाध्याय मनुष्य को तप के गहराई तक ले जायेगा वहाँ ईश्वरप्रणिधान को सूक्ष्मता से करवायेगा। जिससे प्रत्येक कर्म को ईश्वर के प्रति समर्पित कर सके।

महर्षि आगे कहते हैं कि -

प्रतनूकृतान्क्लेशान्प्रसंख्यानाग्निना
दग्धबीजकल्पानप्रसवधर्मिणः करिष्यतीति।

अर्थात् प्रतनूकृतान् क्लेशान्= योगाभ्यासी कमजोर हुए क्लेशों को प्रसंख्यान-अग्निना=विवेकख्याति रूपी अग्नि से दग्धबीजकल्पान्=जले हुए बीजों के समान (अंकुर होने में असमर्थ) बना देता है इसी बात को स्पष्ट किया जा रहा है अप्रसवधर्मिणः= अंकुर उत्पत्ति करने में असमर्थ करिष्यति=करेगा। क्रियायोग द्वारा क्लेश कमजोर हो जाते हैं और कमजोर हुए क्लेशों को योगाभ्यासी विवेकख्याति से जले हुए बीजों के समान करता है। भाष्यकार ने **'प्रसंख्यान'** शब्द का प्रयोग किया है। समाधि पाद के दूसरे सूत्र **(योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः)** में महर्षि वेदव्यास ने मन के सत्त्व, रज, तम के प्रसंग में जब मन में रजोगुण व तमोगुण पूर्ण रूप से दब जाते हैं तब मन की क्या स्थिति बनती है, इस सम्बन्ध में लिखा है कि -

तदेव रजोलेशमलापेतं स्वरूपप्रतिष्ठं
सत्त्वपुरुषान्यताख्यातिमात्रं धर्ममेघध्यानोपगं भवति।
तत्परं प्रसंख्यानमित्याचक्षते ध्यायिनः।

अर्थात् वही मन (जो क्लेशों को कमजोर कर चुका है) जब रजोगुण के लेशमात्र प्रभाव से भी रहित हो जाता है तब अपने निज (सत्त्वगुण प्रधान) रूप में प्रतिष्ठित होता है। अभिप्राय यह है कि मन केवल सत्त्वगुण से युक्त होकर कार्य करता है। ऐसी स्थिति में मन में क्लेशों का प्रभाव नहीं रहता है और मन एकाग्र होता है। उस स्थिति में आत्मा को 'सत्त्व'=जड़ पदार्थों व पुरुष=आत्मा का पृथक्-पृथक् बोध होता है। ऐसे बोध को **'सत्त्वपुरुषान्यताख्याति'** के नाम से कहते हैं। सत्त्वपुरुषा-न्यताख्याति से युक्त मन **'धर्ममेघ'** नामक समाधि की ओर अग्रसर होता है। सत्त्वपुरुषान्यताख्यति को प्राप्त हुए मन को योगी लोग **'परं प्रसंख्यानं मनः'** कह कर पुकारते हैं अर्थात् सर्वोत्कृष्ट ज्ञान से युक्त वाला मन है, ऐसा कहते हैं। **'परं प्रसंख्यानं मनः'** की स्थिति में योगाभ्यासी जड़ को जड़ और चेतन को चेतन यथार्थ रूप से जानता और मानता हुआ वैसा ही व्यवहार करता है।

तप, स्वाध्याय और ईश्वरप्रणिधान मनुष्य को विवेकख्याति तक पहुँचाने वाले हैं। योगाभ्यास न करने वाले (सांसारिक चंचल मन वाले) मनुष्य यदि पुण्य कर्म करने का संकल्प करते हैं और पाप कर्मों से बचना चाहते हैं, तो उनको तप करना होगा। तप ही मनुष्य को सहनशील बनाता है। यद्यपि पाप करने वाले भी सहन करते हैं परन्तु उनका सहन तप नहीं कहलायेगा। इसलिए महर्षि पतञ्जलि एवं महर्षि वेदव्यास सर्वसाधारण को प्रेरित कर रहे हैं कि अच्छे कर्म करो और अच्छे कर्म करते हुए बाधाएँ आ जाये, तो तप करो। यदि तप को सूक्ष्मता से करना है, तो स्वाध्याय करो जिससे ईश्वर का यथार्थ बोध हो सके। इस प्रकार तप, स्वाध्याय व ईश्वरप्रणिधान करते हुए अपने क्लेशों को निर्बल करो जिससे निर्बल हुए क्लेशों को विवेक, वैराग्य व अभ्यास के माध्यम से नष्ट कर सके। क्रियायोग से निर्बल हुए क्लेशों के सन्दर्भ में महर्षि वेदव्यास कहते हैं कि -

तेषां तनूकरणात् पुनः क्लेशैरपरामृष्टा
सत्त्वपुरुषान्यतामात्रख्यातिः सूक्ष्मा प्रज्ञा
समाप्ताधिकारा प्रतिप्रसवाय कल्पिष्यत इति।

अर्थात् तेषाम्= उन क्लेशों के तनूकरणात्= निर्बल होने से पुनः=दुबारा क्लेशैः= क्लेशों से अपरामृष्टा= रहित हुई सत्त्वपुरपान्यतामात्रख्यातिः सत्त्व=जड़ पुरुष= आत्मा को पृथक्-पृथक् करने वाली सूक्ष्मा प्रज्ञा= सूक्ष्म तत्त्वों वाली बुद्धि (ज्ञान) समाप्ताधिकारा= मनुष्य के प्रयोजन को पूर्ण करने वाली बुद्धि प्रतिप्रसवाय= अपने कारण (सत्त्व, रज, तम) में विलीन होने में कल्पिष्यते=समर्थ हो जायेगी।

क्रियायोग के माध्यम से क्लेश निर्बल हो जाते हैं। यहाँ पर क्लेशों का निर्बल होना क्रियायोग के स्तर पर निर्भर करता है अर्थात् जिस प्रतिशत में तप, स्वाध्याय व ईश्वरप्रणिधान को व्यवहार में लाया जाता है उसी प्रतिशत में क्लेशों की निर्बलता बनती जाती है। जैसे-जैसे क्लेशों की निर्बलता बनती जाती है वैसे-वैसे विवेक, वैराग्य का स्तर ऊँचा होता रहता है। इस प्रकार एक ओर से क्रियायोग

thearyasamaj.org

के स्तर को बढ़ाते जाना और दूसरी ओर विवेक, वैराग्य के स्तर को बढ़ाते हुए सत्त्वपुरुषान्यताख्याति को प्राप्त किया जाता है। सत्त्वपुरुषान्यताख्याति के कारण योगाभ्यासी को समाधि लग जाती है। समाधि के दो भेद हैं एक सम्प्रज्ञात दूसरा असम्प्रज्ञात। सम्प्रज्ञात समाधि के चार स्तर हैं। पहला सवितर्का, दूसरा निर्वितर्का, तीसरा सविचारा और चौथा निर्विचारा है। इन चारों स्तरों में अलग-अलग तत्त्वों का साक्षात्कार होता है। चौथे स्तर की समाधि निर्विचारा है, इस समाधि में मन पूर्ण रूप से निर्मल हो जाता है अर्थात् अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेश रूपी सभी क्लेश हट जाते हैं मन केवल तत्त्वज्ञान (विद्या) से युक्त रहता है। ऐसी स्थिति में जिन तत्त्वों का साक्षात्कार होता है, वह यथार्थ सत्य से ओत-प्रोत होता है। उस यथार्थ-सत्य ज्ञान को ऋतम्भरा प्रज्ञा कहते हैं। इसी ऋतम्भरा प्रज्ञा को महर्षि वेदव्यास ने '**सूक्ष्मा प्रज्ञा**' नाम से कहा है। ऐसी प्रज्ञा जो वस्तुओं के गुण, कर्म, स्वभावों को यथावत प्रकट करने वाली होती है और सूक्ष्म से सूक्ष्म पदार्थों का ज्ञान कराने वाली होती है।

महर्षि वेदव्यास ने ऋतम्भरा प्रज्ञा के लिए एक और विशेष शब्द का प्रयोग किया है और वह है '**समाप्ताधिकारा**' ऐसी प्रज्ञा जो मन के अधिकार को समाप्त करने वाली है। मन के कर्त्तव्यों को अधिकार शब्द से कथन किया है। मन के मुख्य दो प्रकार के कर्त्तव्य हैं एक भोग कराना दूसरा अपवर्ग (मोक्ष) दिलाना। जब तक ये दोनों कार्य पूर्ण नहीं होते हैं तब तक मन कार्य करता रहता है। जब सत्त्वपुरुषान्यताख्याति की प्राप्ति होती है तब समाधि लगती है और समाधि की परिपक्व अवस्था में ऋतम्भरा प्रज्ञा प्राप्त होती है। ऋतम्भरा प्रज्ञा के कारण '**गुणवैतृष्ण्यम्**' की स्थिति आती है। उस स्थिति में सर्वथा विवेकख्याति की प्राप्ति हो जाती है अर्थात् असम्प्रज्ञात समाधि की ओर अग्रसर होता है। असम्प्रज्ञात समाधि की स्थिति उत्पन्न होने पर मन के दोनों कार्य (भोग व अपवर्ग) पूर्ण हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में मन के द्वारा करने योग्य कार्य और न होने से समाप्त अधिकार वाला मन बन जाता है। मन को जो करना था, उसने कर दिया अब करने योग्य कुछ कार्य नहीं रहा ऐसे मन को समाप्त अधिकार मन कहा जाता है। मन में ही प्रज्ञा (बुद्धि) रहती है इसलिए मन को व प्रज्ञा को अभेद करके प्रज्ञा को ही '**समाप्ताधिकारा प्रज्ञा**' कहा है। जब असम्प्रज्ञात समाधि लगती है तब मन का कार्य पूरा हो जाता है। ऐसी स्थिति में मन समाप्त अधिकार वाला बन कर रहता है। असम्प्रज्ञात में ईश्वर का साक्षात्कार होता है। मन का कार्य पूरा होने पर भी आत्मा शरीर में इसलिए रहता है कि शरीर पूर्व जन्म का फल है। जब फल समाप्त होता है तब आत्मा मोक्ष में चला जाता है और मन अपने सूक्ष्म शरीर (अठ्ठारह तत्त्वों वाला) के साथ सत्त्व, रज, तम में विलीन होता है। मन के साथ ही वह प्रज्ञा भी विलीन होती है।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

thearyasamaj.org

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग–साधना शिविर (प्राथमिक व द्वितीय स्तर)

दिनांक : १४ से २१ जून, २०१५

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान–विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों-बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग-साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक-दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।
३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य–सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि–उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
६. बाह्य–वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार–पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।
८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय–कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।
१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन–सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।
११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ-मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता–बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्–पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है। ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने–ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ

thearyasamaj.org

में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४
email:psabhaa@gmail.com

(: मार्ग :)

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

-संयोजक

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उस पर **'मन्त्री परोपकारिणी सभा'** अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले २५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त जमा करवाने की कृपा करें। कृपया राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।
IFSC - SBIN0007959

मनुष्यों को उचित है कि परमेश्वर में ही मन बुद्धि को युक्त कर विद्वानों के सङ्ग से विद्या को पा सुखी हो अन्य मनुष्यों को भी इसी प्रकार आनन्दित करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.१४

जैसे विद्वान् लोग ईश्वर की सृष्टि में विद्या से पदार्थों की परीक्षा करके कार्य्यों में उपयोग कर सुखों को प्राप्त करते हैं वैसे ही सब मनुष्यों को इस यज्ञ का अनुष्ठान कर सब सुखों को पहुँचाना चाहिये।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.२२

thearyasamaj.org

ध्यान प्रशिक्षण योजना

ध्यान का महत्त्व सदा से रहा है। आज के तनाव व प्रतिस्पर्धा के वातावरण में यह अधिक आवश्यक हो गया है। नई पीढ़ी यज्ञादि कर्मकाण्ड की अपेक्षा-ध्यान में अधिक रुचि व आकर्षण रखने लगी है। प्रौढ़ों व वृद्धों की आध्यात्मिक उन्नति की चाह ध्यान के माध्यम से पूरी हो सकती है। समाज सुधार व उन्नति के इच्छुक व इसमें प्रयत्नशील आर्यों को ध्यान प्रशिक्षण का उपाय सार्थक लगेगा। ऐसी इच्छा वाले सज्जन अपने यहाँ किसी भी आर्यसमाज, आर्य संस्था, विद्यालय, महाविद्यालय, गुरुकुल, सार्वजनिक स्थान आदि में 'ध्यान-प्रशिक्षण' करवाना चाहते हों, तो कृपया अपने व कार्यक्रम-स्थान, समय आदि की पूरी सूचना के साथ सम्पर्क करें।

परोपकारिणी सभा द्वारा प्रशिक्षित अनेक ध्यान-प्रशिक्षक इस कार्य में सेवा के लिए तैयार हैं। ये ध्यान-प्रशिक्षक आपके जनपद के निकट भी उपलब्ध हो सकते हैं। आयोजकों को कार्यक्रम हेतु स्थान, बैठक-व्यवस्था, आवश्यक हो तो माईक आदि की व्यवस्था, प्रशिक्षक के निवास, भोजन, आवागमन यात्रा आदि की व्यवस्था करनी होगी।

सम्पर्क-संयोजक, ध्यान प्रशिक्षण योजना, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर, ३०५००१, दूरभाष-०१४५-२४६०१६४, ईमेल-psabhaa@gmail.com

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़ कर ये प्रवचन निःशुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़ कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिख कर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

thearyasamaj.org

।।ओ३म्।।

अलग-अलग स्तरों में योग-साधना शिविर

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि-उद्यान, अजमेर में वर्षों से अब तक योग्य आचार्यों द्वारा योग-साधकों का निर्माण करने के लिए वर्ष में दो बार योग से सम्बन्धित व ध्यान से सम्बन्धित शिविरों का आयोजन किया जाता रहा है और साधकों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रयास किया जाता रहा है। समाज में और अधिक योग्य व आदर्श साधकों की आवश्यकता अनुभव करते हुए इस वर्ष जून मास के शिविर में नवीन पाठ्यक्रम की विधि अपनाकर इस दिशा में एक नया मोड़ दिया गया है।

परोपकारिणी सभा द्वारा ऋषि उद्यान में योग-साधना शिविर (प्राथमिक स्तर) के दो शिविर लगाये जा चुके हैं। यह शिविर ध्यान से सम्बन्धित, ईश्वर-जीव-प्रकृति के वास्तविक स्वरूप को जानने से सम्बन्धित, योगदर्शन व सांख्यदर्शन के कुछ प्रमुख विषयों के सूत्रों के माध्यम से प्राथमिक स्तर पर योगदर्शन व सांख्यदर्शन को जानने-समझने से सम्बन्धित, आत्मनिरीक्षण में कुछ नये विषयों को सूक्ष्मता से समझने से सम्बन्धित, दिनचर्या को अनुशासित व सात्त्विक बनाने से सम्बन्धित तथा विभिन्न सैद्धान्तिक व व्यावहारिक विषयों के ज्ञान से सम्बन्धित प्रारम्भिक स्तर के योग के इच्छुक साधकों के लिए लगाया गया। इस योग-साधना शिविर को आगामी वर्षों में चतुर्थ स्तर तक लगाने की योजना बनाई गई है। प्रारम्भिक स्तर से लेकर द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ स्तर तक के शिविरों में पूर्व सूचित पाठ्यक्रमित विषयों में अधिक से अधिक सूक्ष्मता, दिनचर्या में और अधिक अनुशासन व सात्त्विकता, आहार-शुद्धि से लेकर मन, आत्मा की शुद्धि पर्यन्त अनुभवात्मक स्तर पर योग-साधकों को ज्ञान करवाया जाएगा। प्रत्येक स्तर के साधकों को उनके सैद्धान्तिक व व्यावहारिक ज्ञान से सम्बन्धित तथा उनके व्यक्तिगत आचरण व अनुशासन को दृष्टि में रखते हुए परीक्षा-पद्धति के माध्यम से प्रथम-श्रेणी व उच्च प्रथम-श्रेणी के प्रमाण-पत्र दिए जायेंगे। इस प्रकार की विधि से योग्य साधकों को समाज में सम्मान मिलेगा तथा वे और अधिक उत्साह से समाज व देश के कल्याण के लिए कार्यरत होंगे, उन्हें देखकर अन्य साधक भी प्रेरित होंगे।

परोपकारिणी सभा व गुरुकुल ऋषि उद्यान के योग्य आचार्यों व संयोजकों द्वारा नवनिर्मित इस योजना के प्राथमिक स्तर में पर्याप्त उपलब्धि हुई है। भविष्य में इस योजना में आप सब के सहयोग की आवश्यकता है।

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अतः सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अतः लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छः माह या अधिक समय भी लग सकता है, अतः कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें। **-संपादक**

thearyasamaj.org

कुछ तड़प-कुछ झड़प

– राजेन्द्र जिज्ञासु

अविस्मरणीय केरल यात्रा:- १३ सितम्बर सन् २०१४ के दिन केरल प्रदेश में महर्षि दयानन्द कृत यजुर्वेद भाष्य के मलयालम अनुवाद का विमोचन करने के लिए वेद विद्या प्रतिष्ठान की ओर से एक भव्य समारोह किया गया। इस अवसर के लिए कोई डेढ़ वर्ष पूर्व श्री डॉ. धर्मवीर जी तथा इस सेवक को वहाँ के आर्यों ने आमन्त्रित कर दिया था। इतने बड़े ग्रन्थ के मुद्रण, प्रूफ आदि पढ़ने में कुछ विलम्ब हो ही जाता है। मान्य श्री धर्मवीर जी सामाजिक कार्यों के आधिक्य से उन्हीं तिथियों में नागपुर में बन्ध गये। केरल वैदिक मिशन की ओर से श्री डॉ. अशोक आर्य जी को प्रेरित करके उन्हें भी इस समारोह में भाग लेने के लिए तैयार कर लिया गया। वह सोत्साह इस यात्रा के लिए सपत्नीक तैयार हो गये।

हमने नौ सितम्बर को केरल एक्सप्रैस से अपना आरक्षण करवा लिया। मुझे आठ को प्रात: अबोहर से दिल्ली के लिए निकलना था। सात सितम्बर दोपहर को सड़क पर जा रहा था कि न जाने किसी ने मुझ पर क्या मारा। मेरा सिर फूटा। लहूलुहान हो गया। गहरी चोट लगी। बच कैसे गया। यह ईश्वर ही जानता है। डॉक्टर भी दंग रह गये। बारह-तेरह टांके लगे। मैं स्वजनों के भारी दबाव व रोकने पर भी आठ को प्रात: केरल यात्रा के लिए चल पड़ा। आठ को रात्रि पुन: दिल्ली में डॉ. अशोक जी ने एक अच्छे डॉक्टर से मेरी पट्टी आदि करवा दी।

चलने लगे तो एक और विकट समस्या खड़ी हो गई। डॉ. अशोक जी का सुयोग्य जवान बेटा प्रिय सुधाकर आर्य श्रीनगर बाढ़ में फंस गया। उससे परिवार के सम्पर्क टूट गये। मोदी सरकार, भारतीय सेना के जवान बाढ़ में घिरे लोगों की सुरक्षा में जी-जान से जुटे थे। अशोक जी की मन:स्थिति की तो क्या कहें, उनसे जुड़े सब आर्य भाई भी सुधाकर की सुरक्षा के लिए चिन्तित थे तथापि वह ईश्वर का नाम लेकर उसकी वेदवाणी के लिए मुझे लेकर चल पड़े। उनका धैर्य व धर्मभाव आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणाप्रद रहेगा। चलते-चलते मैंने प्रिय सुधाकर जी की पत्नी से कह दिया कि कोई समाचार मिले तो तत्काल हमें सूचना देवें।

कई घण्टे की यात्रा के पश्चात् समाचार मिला कि वह कहीं सुरक्षित है फिर पता चला कि सेना के संरक्षण में है। तीन दिन में दिल्ली पहुँचेगा। केरल पहुँचते-पहुँचते यह सुखद समाचार मिल गया कि सुधाकर दिल्ली पहुँच गया। हमने उससे बात करके ईश्वर को धन्यवाद दिया। इन दोनों घटनाओं के कारण तो यह यात्रा हम दोनों के लिए स्मरणीय रहेगी ही। प्रभु की अमर वेदवाणी में ऋषि के वेदभाष्य का दक्षिण की किसी भाषा में प्रथम बार प्रकाशित होने के ऐतिहासिक अवसर पर **ग्रन्थ के विमोचन का प्रत्यक्षदर्शी साक्षी बनने का गौरव क्या कोई छोटी घटना थी?** हमें यह गौरव प्राप्त हुआ। हमें अपने सौभाग्य पर अभिमान है। यह घड़ी, यह घटना, यह यात्रा हमारे लिए अविस्मरणीय रहेगी।

अब मेरे सिर के टांके खुल गये हैं। मैं समाज सेवा, धर्म रक्षा के लिए ठीक-ठाक हूँ। कटिबद्ध हूँ। भोग-भोगा गया। बच भी गया। प्रभु मुझसे समाज सेवा चहाते हैं, मैं मरण पर्यन्त यह कर्त्तव्य निभाऊँगा। वेदभाष्य के प्रकाशन व विमोचन की व्यवस्था करने वाली संस्था वेद विद्या प्रतिष्ठान तथा इनके सब सदस्य व सहयोगी सब वेदभक्त धन्यवाद व बधाई के पात्र हैं। ऋषि के भाष्य के अनुवादक श्री पं. परमेश्वरण जी केरलीय दिवंगत हो चुके हैं। आप पूज्यपाद स्वामी आत्मानन्द जी के चरणों में लम्बे समय तक उनके गुरुकुल में रावलपिण्डी में पढ़ते-पढ़ाते रहे। आप पूज्य स्वामी वेदानन्द जी महाराज तथा श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के चरणों में भी कुछ समय तक रहे। आपके निधन पर भी श्री धर्मवीर जी, श्रीमती ज्योत्सना जी तथा यह सेवक उन्हें श्रद्धाञ्जलि देने केरल गये थे। केरल में वैदिक साहित्य प्रकाशन के लिए गत चालीस वर्षों तक केरल वैदिक मिशन ने पर्याप्त आर्थिक सहायता नरेन्द्र भूषण महोदय को दी। इस सेवक ने जो व्यक्तिगत सहायता दी व दिलाई वह अलग है।

पहली बार उत्तर भारत के आर्यों की सहायता के बिना इतना बड़ा यह कार्य हो पाया है। दो खण्डों में अति सुन्दर साज-सज्जा, बढ़िया कागज़, बढ़िया टाईप, अति सुन्दर जिल्द के साथ यह पवित्र ग्रन्थ वेदभक्तों को उपलब्ध करवाया गया है। इसका मुख्य श्रेय श्री रघुनाथ जी व उनके सहयोगियों को प्राप्त है। श्रीयुत् स्वामी दर्शनानन्द जी,

thearyasamaj.org

श्री विश्वनाथन जी, श्री प्रशान्त आर्य जी के अथक पुरुषार्थ व श्रद्धा का वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता।

समारोह की विशेषतायें:- यह समारोह आर्यसमाज के इतिहास तथा केरलवासियों के लिए भी एक ऐतिहासिक दिन के रूप में स्मरण किया जायेगा। आर्य सज्जनो! क्या यह कोई कम महत्त्व की बात है कि आचार्य शंकर की धरती पर ट्रावनकोर की राजमाता मान्या गौरी लक्ष्मी बाई ने वेदभाष्य का विमोचन किया। इस अवसर पर मैंने अपने भाषण में श्रद्धा से भरपूर हृदय से पूरे जोश के साथ पूज्य पं. चमूपति जी की ये पंक्तियाँ सुनाकर महर्षि की दिग्विजय-वैचारिक क्रान्ति का अभिनन्दन किया:-

वह टूटा जो था वेद विद्या पै ताला।
दयानन्द स्वामी तिरा बोल बाला।।

इस समारोह की अध्यक्षता इसरो के पूर्व प्रधान यशस्वी वैज्ञानिक डॉ. जी. माधवन नायर जी ने करके इसकी शोभा बढ़ाई। केरल सरकार के एक पूर्व प्रिंसिपल सैक्रटरी डॉ. व.न. राजशेखरन जी, श्री शंकराचार्य विश्वविद्यालय के उपकुलपति डॉ. दिलीप कुमार जी, श्री शंकर विश्वविद्यालय के एक अन्य प्रतिष्ठित विद्वान् श्री धर्मराज जी भी इस अवसर पर पधारे। सबने वेदवाणी की महिमा व गौरव पर अपने सारगर्भित विचार रखे।

श्री धर्मवीर जी के न पहुँचने से मैं चिन्तित था। आर्ष साहित्य तथा व्याकरण के एक विद्वान् का अभाव बहुत खलता था। वहाँ पहुँचते ही यह शुभ सूचना पाकर बड़ा हर्ष हुआ कि श्रीमान् स्वामी ऋतस्पति जी भी कुछ ही घण्टे में पहुँच गये। एक विद्वान् वेदभक्त, ऋषिभक्त संन्यासी की उपस्थिति से हमारा सिर ऊँचा हो गया। इस अवसर पर इस विनीत आचार्य रामदेव जी, मेहता जैमिनि जी, पं. धर्मदेव जी की शैली में वेद की तथा ऋषि के वेद भाष्य की महिमा पर एक जोशीला व्याख्यान देते हुए महान् स्वामी श्रद्धानन्द महाराज तथा केरल के मुकट विहीन सम्राट श्री मन्नम का भी स्मरण किया। यह हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द महान् ही थे जिन्होंने वायक्कम सत्याग्रह का नेतृत्व करते हुए अस्पृश्यता व कुरीतियों से युद्ध छेड़कर केरल तथा दक्षिण में हर घर में आर्यसमाज, ऋषि दयानन्द व वेद का नाम तो पहुँचा दिया। मुझे श्री मन्नम ने स्वयं सगर्व कहा था, "**मैं भगवान् स्वामी श्रद्धानन्द महाराज का वायक्कम सत्याग्रह का एक सैनिक हूँ।**"

इसरो के पूर्व अध्यक्ष श्रीमान् डॉ. माधवन नायर जी ने विशेष रूप से मुझसे पूछा, "क्या आप श्री मन्नम से मिले थे?" मैंने कहा, "एक बार नहीं, दो बार मिला था। उन्होंने अपना अन्तिम साक्षात्कार इसी सेवक को दिया था। राजमाता लक्ष्मी गौरी बाई जी को ऋषि मेला का निमन्त्रण दिया। इस बार तो वही कहीं अन्यत्र समय दे चुकी हैं। अगले ऋषि मेला पर आने का आश्वासन दिया। श्री डॉ. अशोक आर्य जी ने केरल वैदिक मिशन की ओर से वेदभाष्य के २५ सैट की राशि प्रतिष्ठान् को भेंट की। अगले दिन १४ सितम्बर के दिन केरलीय आर्य भाइयों ने मेरा सम्मान किया। पचास वर्षों से भी अधिक समय से मैं केरल में चालीस प्रचार यात्रायें कर चुका हूँ। मैंने तन-मन-धन से वैदिक मिशन का केरल में बीज बोया। केरल को जो दे सकता था, देता आया हूँ। केरलीय भाइयों ने सम्मान राशि भी भेंट की जिसका एक भाग मैंने शोध कार्यों में स्थापित श्रीमती वेद जिज्ञासु स्थिर निधि में देने की वहीं घोषणा कर दी।

श्री प्रो. जयदेव आर्य जी जैसे प्रबुद्ध विद्वान् ने मुझे चलभाष पर पूछा दिल्ली के सज्जन कालीकट गये, वहाँ किसी ने भी आपकी केरल के लिए कोई चर्चा नहीं की। फिर पूछा, "क्या आप श्री म.र. राजेश को जानते हैं?" मैंने कहा, "मेरा नाम नहीं लिया गया, यह कौनसी अचम्भे की बात है? वहाँ स्वामी श्रद्धानन्द जी, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, पूज्य उपाध्याय जी व मेहता जैमिनि को किसने याद किया? मैं उनसे तो बड़ा नहीं हूँ। कोई मुझसे सम्पर्क करता तो मैं यह तो इन्हें समझा सकता था कि केरल में अपनी बात कैसे कहनी चाहिये।

रही श्री राजेश जी की बात सो राजेश जी ही ठीक-ठीक बता सकते हैं कि मेरा उनसे कबसे? कितना? व कैसा सम्बन्ध रहा है और अब है या नहीं। स्वामी ऋतस्पति जी से मेरे सिर की गम्भीर चोट का पता लगते ही श्री राजेश जी के साथी श्री अरुण प्रभाकर मेरा पता करने समारोह में पहुँचे। श्री राजेश जी ने भी चलभाष पर बात की। आर्य विद्वानों, आर्य शास्त्रार्थ महारथियों के इतिहास पर व्याख्यान माला के लिए कालीकट का निमन्त्रण भी दिया। मैं उनके स्नेह के लिए आभार मानता हूँ। मेरे लिए अपने उद्‌गार प्रकट करते हुए आपने मलयालम भाषा के एक विशेष शब्द का प्रयोग किया जिसका उल्लेख आज नहीं करता। केरल के सम्पन्न यात्रियों ने, नेताओं ने मन से मुझे निकाल कर केरल यात्रा की, यह भी तो एक स्मरणीय

thearyasamaj.org

शोभनीय, प्रेरणाप्रद प्रसंग है।

अब केरल के कई नगरों व केन्द्रों से वैदिक धर्म प्रचार की दुहाई देने वाले कई व्यक्ति अपनी-अपनी योजनायें लेकर कुछ न कुछ सक्रिय हैं। कुछ सज्जन अपनी हिम्मत से अपने बल बूते पर कार्य करके नया इतिहास रच रहे हैं। कुछ उत्तर भारत से आशा लगाकर अपनी योजनायें चला रहे हैं। हमने प्रेरणा तो बहुत दी परन्तु ऐसा लगा कि सबको एक सूत्र में नहीं पिरोया जा सकता। केरल वैदिक मिशन ने वहाँ गुरुकुल खोलने की कभी बात मान ली। वहीं एक बैंक में रुपया भी जमा करवा दिया। अब रघुनाथ जी के साथ श्री स्वामी दर्शनानन्द जी के रूप में एक आर्य संन्यासी हैं, प्रशान्त आर्य हैं और आचार्य उदयवीर जी के सुयोग्य शिष्य श्री गोपालकृष्ण जी हैं। केरल में कुछ ठोस कार्य हो। कालीकट वाले यज्ञ हवन सन्ध्या के साथ अंधविश्वासों व गुरुडम तथा अवैदिक मतों से भी टक्कर लेंगे तो अच्छा होगा। केरल उत्तर भारत वालों के लिए उल्लास यात्रा न बने, यह हमारी भावना होनी चाहिये।

- वेद सदन, अबोहर, पंजाब

गुणवान कम मिलते हैं

- दाताराम आर्य 'आलोक'

भीड़ बहुत है दुनियाँ में, पर इंसान कम मिलते हैं।
शक्ल पहनावे से सुन्दर, पर गुणवान कम मिलते हैं।।
लुटाते हैं, नाच गानों में, लोग धन को खूब,
पर गऊशाला के नाम पर, दान कम मिलते हैं।
खुश होते हैं लोग, सुनके गीत बेढंगे,
जो वेद मन्त्र सुने, ऐसे कान कम मिलते हैं।
हो रही है हीरे मोतियों की बरसात वेदों में,
लेकिन चुनने वाले, कदर दान कम मिलते हैं।
'आलोक' इन पथों से, गुजरे कितने ही महापुरुष,
लेकिन दयानन्द के जैसे, उज्ज्वल निशान कम मिलते हैं।

ग्राम बुटेरी, तह. बानसूर, जि. अलवर, राज.-३०१४०२
दूरभाष- ०९८११७४११७६

वैदिक साहित्य पर विशेष छूट

दानी महानुभावों के विशेष सहयोग से वैदिक पुस्तकालय, अजमेर द्वारा प्रकाशित रु. १६३५/- मूल्य की निम्न पुस्तकों का एक सैट ग्राहकों को आधे मूल्य (५० प्रतिशत) में अर्थात् रु. ८१७/- में दिया जा रहा है। पुस्तकों को डाक द्वारा मँगाने पर डाक व्यय के रु. १८३/- अतिरिक्त सहित कुल राशि रु. १०००/- में ग्राहकों को देय होगा।

पुस्तकों के सैट उपलब्धता रहने तक प्राथमिकता के आधार पर देय होंगे।

क्र. सं.	पुस्तक सं.	पुस्तक का नाम	मूल्य
१.	१२	ऋग्वेद भाषा भाष्य-१२ पुस्तक-१ सैट	६१०.००
२.	२	यजुर्वेद भाषा भाष्य-२ पुस्तक-१ सैट	४७५.००
३.	३	दयानन्द ग्रन्थमाला-३ पुस्तक- १ सैट	५५०.००
	१७	**योग**	**१६३५.००**

पुस्तकें मँगाने हेतु धनराशि-एम.ओ., डिमाण्ड ड्राफ्ट या ऑनलाईन द्वारा

खातेदार-वैदिक पुस्तकालय, अजमेर

बचत खाता संख्या- 0008000100067176,

बैंक- पंजाब नेशनल बैंक, कचहरी रोड, अजमेर

आई.एफ.एस.सी. संख्या PUNB 0000800 के द्वारा भेज सकते हैं।

thearyasamaj.org

लौहपुरुष स्वामी स्वतन्त्रानन्द के जन्मदिन पर

- स्वामी सदानन्द सरस्वती

स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी का जन्म विक्रमी सम्वत १९३४ के पौष मास में पंजाब के मोही ग्राम में हुआ। इनके पिता का नाम सरदार भगवान सिंह जी तथा स्वामी जी का प्रारम्भ का नाम केहरसिंह था। सन् १८७६ में महर्षि दयानन्द सरस्वती पंजाब आये तब वहाँ जनचेतना का संचार हुआ और इसी चेतना के स्वरूप पंजाब में आर्यसमाज के द्वारा जनजागृति हुई तथा वहाँ स्वाधीनता सैनानियों, देशभक्तों एवं साहित्यकारों का आविर्भाव हुआ।

केहरसिंह जी ने वैद्यक के साथ-साथ धर्मशास्त्रों का अध्ययन किया तथा वैभवशाली परिवार को त्याग कर संन्यास ग्रहण किया और वैदिक धर्म के प्रचार में स्वयं को लगा दिया। आप आजीवन ब्रह्मचारी रहे। आपने दक्षिण-पूर्व एशिया में भी वैदिक धर्म का प्रचार किया। आपके त्यागी-तपस्वी रूप से सारा पंजाब प्रभावित हुआ। आपने तीन वर्ष तक मॉरीशस में भी वेद प्रचार किया।

विदेशों में धर्म प्रचार करने के उपरान्त आप भारतवर्ष में आकर स्वाधीनता संग्राम में व्यस्त हो गये तथा स्वामी श्रद्धानन्द जी के साथ आप राष्ट्र के हित में संलग्न हो गये। जब पंजाब के कांग्रेसी नेता जेल में थे तब उनकी अनुपस्थिति में आपने राष्ट्रीय आन्दोलन को जारी रखा। १९३० में आपके उग्र राष्ट्रीय आन्दोलन के कारण आपको कारागार में डाल दिया।

१९४२ के भारत छोड़ो आन्दोलन में आपने गाँधी जी का साथ दिया। इससे वायसराय ने कुपित होकर आपको शाही किला लाहौर में बन्दी बनाकर भयंकर यातनायें दी।

स्वामी जी ने १० वर्षों तक श्रीमद्दयानन्द उपदेशक विद्यालय में आचार्य के पद पर रहकर सैकड़ों कार्यकर्ता तैयार कर आर्यसमाज को दिये, जो क्रान्तिकारी थे उनको भी अपने आश्रम में शरण दी। सन् १९३८ में आपने पंजाब में दयानन्द मठ दीनानगर की स्थापना की। यह मठ तब से लेकर आजतक वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार कर रहा है। यहाँ सैकड़ों मरीज मठ स्थित औषधालय का नित्यप्रति लाभ उठा रहे हैं।

निजामशाही की अन्ध साम्प्रदायिक शक्तियों का आपने डटकर विरोध किया। लोहुरु के नवाब ने तो आप पर कुल्हाड़ियों एवं लाठियों से प्राणघातक आक्रमण करवाया परन्तु आपके अखण्ड ब्रह्मचर्य एवं नैतिक बल ने आपको गिरने नहीं दिया और ६५ वर्ष की अवस्था में भी आप अजेय योद्धा की तरह इन राष्ट्रद्रोही नवाबों व निजामों से मरते दम तक लोहा लेते रहे।

विदेशों में बसे आर्यों में आपने अपने ओजस्वी व्यक्तित्व द्वारा स्वाभिमान पैदा किया और उन्हें अपने राष्ट्र की गरिमा गौरव व धर्म से बांधकर रखा।

आपने ९८ वर्ष की अवस्था में दि. १३ अप्रैल १९५५ को मुम्बई में निर्वाण प्राप्त किया।

आपके १५८ वें जन्म दिवस पर सम्पूर्ण आर्यजगत् आपको श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए ईश्वर से कामना करता है कि ऐसा ही वीर, ब्रह्मचर्यव्रती, निष्ठावान्, आर्य त्यागी-तपस्वी, ऋषिभक्त, परम उपदेशक, निर्भय, निर्लेप व्यक्तित्व का धनी पुनः इस आर्यवर्त में उत्पन्न हों।

- दयानन्द मठ, दीनानगर, पंजाब

जिस यज्ञ से सब सुख होते हैं उसका अनुष्ठान सब मनुष्यों को क्यों न करना चाहिये।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६०

इस प्रत्यक्ष चराचर जगत् के चौंतीस (३४) तत्त्व कारण हैं उनके गुण और दोषों को जो जानते हैं उन्हीं को सुख मिलता है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६१

मनुष्यों को चाहिये कि सदा यज्ञ का आरम्भ और समाप्ति को करें और संसार के जीव को अत्यन्त सुख पहुँचावें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६२

thearyasamaj.org

श्रद्धा, तर्क और आस्था

- वीरेन्द्र कुमार अलंकार

किसी वस्तु या तत्त्व की उपयोगिता उसको ठीक-ठीक समझने में है। इन्टरनेट हो या कम्प्यूटर, परमाणुविज्ञान हो या मेडिकल साईंस- इनका उपयोग भी खूब हुआ है और दुरुपयोग भी खूब। आयुधों से लोगों की सुरक्षा भी सम्भव है और इनसे विनाश भी कम नहीं हुआ है। इसी तरह श्रद्धा, तर्क और आस्था के भी उपयोग और दुरुपयोग दोनों ही हुए हैं। कुछ चतुर लोगों ने 'आस्था' को कवच बनाकर अपने को सुरक्षित भी कर लिया है। 'आस्था' और 'लीला' शब्दों की तो लीला ही अलग है। इनके सहारे हमने प्रश्नों से भागना सीख लिया है। पर, यह पलायन कब तक करते रहेंगे। यदि कोई प्रश्न करे कि आपके अमुक उपास्य देव ने ऐसा क्यों किया तो उत्तर होगा यह तो भगवान् की लीला है। यदि कोई पूछे कि आप अमुक देवता को क्यों मानते हैं तो इसका उत्तर भी बड़ा साफ है कि अपनी अपनी 'आस्था' है। ये आस्थावान् लोग प्राय: कहा करते हैं कि-मानों तो पत्थर में भी भगवान् और न मानों तो भगवान् भी पत्थर। पर क्या मानने से तथ्य बदल जाएगा। लोकव्यवहार में कुछ सीमा तक तो ठीक है। बुजुर्ग व्यक्ति कई बार कह देता है कि मैं तो तुझे अपना बेटा ही मानता हूँ। किन्तु लोक में भी क्या किसी को पति माना जा सकता है या भैयादूज मनाने वाली कोई स्त्री अपने पति को थोड़ी देर के लिए भाई मान सकती है। दार्शनिक, आध्यात्मिक और वैज्ञानिक जगत् में तो बिना आधार के यूँ ही कुछ मानने से एक कदम भी आगे नहीं बढ़ा जा सकता।

हमने 'आस्था' शब्द की गम्भीरता को न समझकर एक हथियार की तरह इसका प्रयोग करना सीख लिया है। इस हथियार से सबसे पहले हमने 'तर्क' की हत्या की। इसलिए धर्म के नाम पर कहीं कुछ भी होता रहे, आपको चुप रहना ही होगा। यदि आपने तर्क किया या कोई प्रश्न उठाया तो आपको समाधान की अपेक्षा यह धमकी मिलेगी कि आपने हमारी आस्था को चोट पहुँचाई है। हमारे एक मित्र महाज्योतिषी हैं, मुहूर्त्तविद्या के महापण्डित। किसी संवाद में हमारे मुँह से निकल गया कि क्यों मुहूर्त्त-वुहूर्त्त के चक्कर में समय बर्बाद करते हो। चोर किसी ज्योतिषी से मुहूर्त्त निकलवाकर चोरी करता है क्या? बस इसका इतना ही उत्तर मिला कि भई, अपना-अपना विश्वास है। इससे मेरे प्रश्न का समाधान कैसे हुआ। इसी प्रकार वर्ष २००१से पंजाब विश्वविद्यालय के संस्कृत-विभाग में ज्योतिष विषय में एम.ए. चलाने की योजना चल रही थी। बड़े-बड़े ज्योतिर्विदों ने पाठ्यक्रम तैयार किया। पर, विश्वविद्यालय में यह एजेंडा पास नहीं हो पा रहा था। अब वर्ष २००४ में मैं विभागाध्यक्ष हो गया, तो एजेंडे को पास कराने की जिम्मेवारी मेरी हो गई। हमारे ज्योतिषी मित्रों का बार-बार यही आग्रह था कि नए सिरे से पाठ्यक्रम बना कर इसे विश्वविद्यालय को भेजा जाए, क्योंकि हिन्दू विधियों में मुहूर्त्तादि का बड़ा महत्त्व है। पाठ्यक्रम तैयार हो गया, विभाग में ज्योतिष के विद्वान् एकत्र हुए और शायद मुझ पर कुछ शंका हो, इसलिए मुझसे पूछा गया कि क्या एम.ए. (ज्योतिष) का एजेंडा भेजा जा चुका है। मैंने बड़ी विनम्रता से निवेदन किया- नहीं। पण्डितों ने पूछा- क्यों नहीं भेजा गया अब तक। मैंने प्रार्थना की कि मैं शुभ मुहूर्त्त की प्रतीक्षा कर रहा हूँ । आप लोग मुझे ऐसा मुहूर्त्त बताएँ, जिसमें भेजने पर यह एजेंडा तुरन्त पास हो जाए। कोई ऐसा पूजा-पाठ का उपाय करें कि सब अनिष्ट दूर हो जाएँ, शत्रुग्रह प्रसन्न हो जाएँ और कोई रोक न पाए। अब सबके मुँह पर ताला। अब आप बताएँ मेरी क्या गलती। खैर, सब पीठ पीछे भुनभनाते रहे कि यदि इनकी मुहूर्त्त में आस्था नहीं है तो हमारी आस्था पर कटाक्ष करने का अधिकार भी इनको किसने दिया।

विचार कीजिए क्या यही आस्था है। क्या विचार को मार देना आस्था है। यह कैसी आस्था जिसमें मुँह खोलने पर पाबन्दी हो और सार्थक चर्चा का अवकाश ही न हो। भारत में तो शास्त्रार्थ की परम्परा रही है। वैचारिक संवाद और विश्लेषण के बिना कैसा धर्म और कैसा दर्शन। संस्कृत दर्शन तो पूर्वपक्ष के बिना चलता ही नहीं। आदि

thearyasamaj.org

शंकराचार्य ने बौद्धों के साथ शास्त्रार्थ किए तो क्या यह आस्था पर प्रहार था? यदि दयानन्द सरस्वती वेदार्थ के उद्‌घाटन के लिए शास्त्रार्थों द्वारा शास्त्रों पर जमी मिथ्या अर्थ(अनर्थ) की काई को हटाने का पुरुषार्थ करते हैं, तो क्या यह आस्था पर प्रहार है? महात्मा बुद्ध ने वेद और शास्त्र के नाम पर चल रहे पशुहत्या जैसे गोरखधन्धों को रोकने के लिए तर्क और उपदेश दिए, तो क्या इसे आस्था पर प्रहार मानेंगे? वैचारिक मन्थन के बिना सत्यार्थ का निर्णय कैसे सम्भव है? आस्था, श्रद्धा और तर्क को ज्ञानलब्धि में पूरक मानने पर ही धर्म और दर्शन पर सदियों से जमी मैल की परत हटने की सम्भावना बनेगी।

अभी (जून, २०१४ में) स्वामी स्वरूपानन्द जी (शारदा पीठ के शंकराचार्य) का एक वक्तव्य आया कि हिन्दू लोग साँई बाबा की पूजा न करें। इस पर तथाकथित आस्थावान् लोगों के दो धड़े बन गए। इनमें खूब शोरशराबा भी हुआ, पर किसी भी पक्ष से किसी सार्थक पहल या तर्क की शुरुआत नहीं दिखाई दी। क्या पूजा की विशेष विधि आस्था है या विशेष व्यक्ति के साथ जुड़ना आस्था है। वस्तुत: आस्था का सही अर्थ है- **आ समन्ताद् विचार्य विश्लिष्य स्थीयतेऽत्र इत्यास्था** अर्थात् सब प्रकार से (श्रद्धा और तर्क के साथ) विश्लेषण करके जिस निष्कर्ष पर पहुँचा जाता है, उसे आस्था कहते हैं। क्या राम, कृष्ण या साँई बाबा पर विवाद होने पर श्रद्धा और तर्क के साथ विश्लेषण अपेक्षित नहीं है। तर्क के बिना आस्था आस्था न हो कर अन्धविश्वास है। इसलिए तर्क नहीं तो आस्था कैसी।

स्वामी स्वरूपानन्द जी के साँई विषयक वक्तव्य पर भारतीय संचार-माध्यमों विशेषरूप से टेलीविजन के कुछ चैनलों पर विशेष चर्चा-परिचर्चा चली और संवादकर्त्ता व संवाददाता बार-बार यह दोहरा रहे थे कि क्या हिन्दू धर्म या सनातन धर्म इतना कमजोर है कि साँईबाबा की पूजा से उसकी हानि हो जाएगी। वस्तुत: दिशाहीन संवाद से सार्थकता की अपेक्षा भी क्या। इस तथाकथित आस्थावान् लोगों के साक्षात्कार के लिए महायुद्ध, धर्मयुद्ध जैसे भारी भरकम शब्दों का प्रयोग करके आकर्षण पैदा किया गया। एक पक्ष कह रहा था राम और कृष्ण ही विष्णु के अवतार हैं। इसलिए हिन्दू इन्हीं की पूजा करें। दूसरा पक्ष इसके जवाब में साँईबाबा की प्रतिमाओं को गंगा में स्नान करा कर मानो अपनी विजय का प्रदर्शन कर रहा था। न कोई सवाल, न ही जवाब। संवाद आगे बढ़ाने वाले तो एक ही बात दोहरा रहे थे कि-क्या हिन्दू धर्म या सनातन धर्म इतना कमजोर है कि साँई बाबा की पूजा से उसकी हानि हो जाएगी।

इस वक्तव्य पर भला क्या प्रतिक्रिया हो सकती है। कोई यह प्रश्न करे कि क्या मुस्लिम धर्म इतना कमजोर है कि राम की प्रतिमा मस्जिद में लगाने से उसकी हानि होगी यह कोई कहे कि क्या ईसाई धर्म इतना कमजोर है कि अग्निहोत्र करने से उसकी हानि होगी। वस्तुत: ये सारे ही प्रश्न व्यर्थ हैं। व्यर्थ प्रश्नों का समाधान क्या। मेरी दृष्टि में स्वामी स्वरूपानन्द जी के इस आक्षेप का महत्त्व ही कुछ नहीं कि साँईबाबा की पूजा न की जाए। मूल प्रश्न तो यह होना चाहिए कि पूजा किसकी की जाए और कैसे की जाए। हिन्दूधर्म या सनातनधर्म में किस किस की पूजा अनुमत है और किस किस की निषिद्ध, यह सूची तैयार करनी बड़ी टेढी खीर है। यदि सूची तैयार कर भी ली तो उसका आधार क्या और यदि आधार नहीं तो उसकी वैज्ञानिकता पर प्रश्न उठेंगे ही। इस समस्या के समाधान के लिए वेद से अधिक प्राचीन और उपयोगी साहित्य विश्व के पुस्तकालयों में नहीं मिलेगा। इसलिए हिन्दूधर्म जिसका सही नाम वैदिक धर्म है, को अपने सब समाधान वेद में मिलेंगे। वेदार्थ की शैली के बोध के लिए सर्वप्रथम वेद की भूमिका पढ़ ली जाए, तो वेदाध्ययन की दिशा ठीक रहेगी। ऋषि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रणीत **'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका'** इसके लिए अत्यन्त उपयोगी ग्रन्थ है।

वेद और उपनिषदों का सिद्धान्त यह है कि एक ईश्वर की ही उपासना करनी चाहिए। इसमें हिन्दू, सिख, ईसाई और मुस्लिम प्राय: सभी को अनापत्ति है। वैदिक दर्शन में ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप है। ईश्वर के स्वरूप और उपासनाविधि पर विविधता तो हो सकती है, पर ईश्वर के ऐक्य से सब सहमत हैं। साँई की भक्ति के समर्थन में यह तर्क दिया गया कि साँईबाबा तो साम्प्रदायिक सद्भाव के प्रतीक हैं, क्योंकि साँई के भक्त हिन्दू भी हैं और मुसलमान

thearyasamaj.org

भी। पर, इससे यह कैसे सिद्ध हुआ कि साँई की पूजा की जाए। यदि साँई की भक्ति का यही आधार है, फिर यह आधार तो ऋषि दयानन्द के पास भी है। क्योंकि सर सैय्यद अहमद खान जैसे मुस्लिम विद्वान् और अनेक ईसाई विद्वान् भी ऋषि दयानन्द का सम्मान करते थे तो क्या लोगों को ऋषि दयानन्द की प्रतिमा पूजा शुरू कर देनी चाहिए? वैसे साम्प्रदायिक सद्भाव के सबसे बड़े प्रतीक तो स्वयं ईश्वर ही हैं। हिन्दू, सिख, ईसाई, मुस्लिम आदि विभेद से परे मनुष्यमात्र को जन्म देने वाला तो वह ईश्वर ही है। अतः वही एकमात्र उपास्य है। समस्त मनुष्य जाति राम, रहीम, ईसामसीह या साँई के नाम पर कभी नहीं जुड़ सकती, क्योंकि इनका कार्यक्षेत्र कालिक और दैशिक है। केवल ईश्वर ही कालातीत और देशातीत है। परमेश्वर तो समस्त ब्रह्माण्ड का प्रतिनिधि या प्रतीक है। अतः उससे बढकर साम्प्रदायिक सद्भाव का प्रतीक क्या हो सकता है। इसलिए सामञ्जस्य के सबसे बड़े प्रतीक तो ईश्वर ही हैं। किन्तु पौराणिकों का धर्मसंकट यह है कि एकेश्वरवाद को स्वीकार करने में कहीं राम और कृष्ण छूट न जाएँ। यह उनका व्यर्थ का भय है। राम और कृष्ण तो हमारी सांस्कृतिक धरोहर के ऐसे उज्वल चरित्र हैं कि वे मानवीय संस्कृति के आलोक से ओझल नहीं हो सकते। संस्कृति का निर्माण भीति और पलायन पर नहीं हुआ करता। इसलिए यदि 'आस्था' के सुदृढ़ प्रासाद पर अधिष्ठित होना है तो श्रद्धाभाव से तर्क की कसौटी पर विचारों का मन्थन आवश्यक है।

यदि निष्पक्ष विवेचन करें तो इस कटु प्रश्न का सामना करना ही पड़ेगा कि साँई बाबा की पूजा किसने सिखाई। इसका सीधा सा उत्तर है-स्वयं हिन्दुओं (पौराणिकों) ने ही। कोई बाबा खीर, गोलगप्पों, दहीभल्लों से शक्ति के अवतरण का झाँसा देकर कारोबार कर रहा है। कोई धनकवच से लोगों को अमीर बना रहा है। कोई आशीर्वाद से ही सब रोग और संकट हर रहा है। इसमें गलत क्या है? क्या ज्योतिष और वास्तु के नाम पर कभी साबुन, कभी उड़द की दाल का दान करा कर सारे अनिष्टों को दूर करने का दावा नहीं किया जाता? ये गोलगप्पे, खीर, समोसे उसी का तो आधुनिक रूप है। टी.वी. सीरियल्स में देवी-देवताओं के नाम पर क्या कुछ परोसा जा रहा हैं। इस सबसे हमारे तथाकथित धार्मिक संगठनों को कोई आपत्ति नहीं। चालीस-पैंतालीस वर्ष पहले इस देश में 'सन्तोषी' माता आई, तो उसकी पूजा शुरु हो गई। विद्वान् लोग कहते कहते थक गए कि भाई, यह 'सन्तोषी' शब्द तो वैसे भी पुल्लिंग है। पर, आस्था की सुनामी में सब तर्क बह गए। विगत २०-२२ वर्षों से शनि महाराज का खूब शासन चल रहा है। जगह-जगह शनि के मन्दिर बन गए व शनिपूजा शुरु हो गई और हमने प्रत्येक शनिवार के दिन शनि देवता के नाम पर ट्रैफिक रेड लाईट पर शनिभक्तों के रूप में भिखारियों की एक बड़ी फौज तैयार कर दी। शनिवार को लालबत्ती पर रुकते ही आपकी गाड़ी पर ये शनिभक्त लोटे में सरसों का तेल लिए मंडराने लगेंगे। अब नए नए देवी और देवता प्रकट होंगे तो भला कोई कैसे रोक सकता है? चण्डीगढ से कुरुक्षेत्र जाएँ तो पीपली से कुछ पहले एक 'उषा माता' का मन्दिर मिलेगा। दिल्ली पालम में एक दादादेव के नाम से मन्दिर है। दक्षिण भारत में सिनेमा स्टॉर रजनीकान्त के मन्दिर, अमिताभ बच्चन के मन्दिर और क्रिकेटर सचिन तेन्दुलकर के मन्दिर की चर्चा भी संचार माध्यमों से सुनते ही रहते हैं। अब साँई मन्दिर भी सारे भारत में आ गए हैं। इस अन्धी भागमभाग का लाभ दूसरे तो उठाएँगे ही। हमारे कई मुस्लिम मित्रों का कहना है कि हमारे पीर, मजारों का सारा निर्माण तो हिन्दू ही कर देते हैं, क्योंकि हमारा काम तो बस हरे या नीले रंग की कपड़ें की एक पट्टी ही सही जगह फहराना है, बाकि काम हिन्दुओं का है। सारा पैसा हिन्दू लोग चढ़ा देते हैं और पीर या मजार तैयार। यह विचार तो करना ही पडेगा कि इस अन्तहीन तथाकथित पूंजापाठ का जिम्मेवार कौन? इस स्थिति में एक-एक का नाम लेकर किस किस का विरोध करेंगे? इस अन्धी भक्ति के विष से हमारा कितना पतन हुआ है और क्या क्या हानि की सम्भावना है, इस पर गम्भीरता से विचार करना आवश्यक है। ईश्वर की उपासना और देवताओं की पूजा का क्या अभिप्राय है, यह समझे बिना इस रोग इलाज सम्भव नहीं है कि किसकी पूजा की जाए। चण्डीगढ भारत का अत्याधुनिक, शिक्षित और एडवांस शहर है। इसका एक नमूना देख लीजिए (चण्डीगढ भास्कर, दिनांक २६ जुलाई, २०१४, पृ. ३ पर यह खबर

thearyasamaj.org

छपी है)-

१६ हजार ली. दूध चढ़ा रहे भोलेनाथ पर, १३ हज़ार जरुरतमन्दों को पिला सकते हैं हर रोज

''सावन का महीना चल रहा है। इन दिनों हम आस्था स्वरूप भगवान् भोलेनाथ को दूध अर्पित कर रहे हैं। शहर में इन दिनों हर रोज १६ हजार लीटर दूध की ज्यादा खपत हो रही है।.... वहीं समाज में ऐसे बच्चे, बुजुर्ग और अन्य आश्रित हैं, जिन्हें दूध नसीब नहीं होता। ....१६ हजार लीटर में से दसवाँ हिस्सा भी जरुरतमंद बच्चों तक पहुंच जाए, तो हर रोज विभिन्न सामाजिक संस्थानों और आश्रमों में रह रहे करीब एक हजार बच्चों को सावन के महीने हर रोज दूध मिल सकता है। एक बच्चे और जरुरतमंद तक प्रतिदिन एक लीटर दूध भी जाए तो केवल एक हजार लीटर की खपत होगी। बाकी बचा हुआ दूध स्लम कालोनियों में रहने वालों व भीख मांग कर गुजारा करने वाले बच्चों को भी दिया जा सकता है। स्लम में करीब १२ हजार लोग रह रहे हैं। इन्हें एक-एक लीटर दूध रोज पहुँचाया जाए तो भी तीन हजार लीटर दूध मंदिरों में भंडारे के लिए बचा रहेगा।'

यह आस्था है या कुछ और इसे आप जानें। दूसरी बात यह कि सत्य सनातन वैदिक धर्म के उज्वल स्वरूप को समझे बिना हमने स्वयं को बहकाने के लिए यह पङ्क्ति याद कर ली है कि-'कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।' क्या हम अपनी हस्ती मिटने का इन्तजार करते रहेंगे। विशाल आर्यावर्त्त (भारत) के टुकड़े होते रहे, वर्ष १९४७ में कितना बड़ा भूखण्ड चला गया और हम मिथ्या अभिमान करते हैं कि-'कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।' 'लाहौर' पंजाब का सबसे बडा विद्याकेन्द्र था। डी.ए.वी. कालेज और रिसर्च सेंटर, अनेक गुरुकुल सनातन धर्म सभा सब लाहौर में तबाह हो गए और हम खुश हो रहें कि- 'कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।' मुझे गुरुकुल आर्यनगर, हिसार के संस्थापक मेरे पूज्य गुरुदेव स्वामी देवानन्द सरस्वती की बात याद आ रही है। वे कहा करते थे कि हमारी हालत उन भेड़ों की सी है, जिन्हें ट्रक में भरकर ले जाया जा रहा है और वे मजे से जुगाली करती हुई जा रही हैं। उन्हें यह मालूम ही नहीं कि हम कसाई के पास जा रही हैं। इसलिए आँख बन्द कर जुगाली करना छोड़ो। सुरक्षित होने के लिए जागना ही पड़ेगा।

इस पूजा सम्बन्धी विवाद के समाधान के लिए यह निर्णय लेने की क्षमता पैदा करनी ही होगी कि पाषाणपूजा हो या नहीं। यदि नहीं, तो किसी की भी प्रतिमा की नहीं और हाँ, तो फिर विरोध का कोई आधार नहीं है। प्रतिमा की पूजा का लाभ हो या नुकसान वह तो बराबर रहेगा, चाहे वह प्रतिमा किसी की भी हो, हाँ, यदि वेद की बात स्वीकार्य है, फिर तो ईश्वर की प्रतिमा सम्भव ही नहीं है- **न तस्य प्रतिमाऽस्ति यस्य नाम महद्यशः।** हमें यह समझना चाहिए कि अवतारवाद या प्रतिमापूजा का खण्डन राम और कृष्ण का खण्डन नहीं है। राम और कृष्ण की पूजा उनको ठीक-ठीक समझने में है। राम और कृष्ण जैसे महान् चरित्रों को सही रूप में प्रस्तुत करने से लोगों में आत्माभिमान और पौरुष का उदय होता है। यदि आप ईश्वर को मानते हैं तो उसे निराकार और काल से अपरिच्छिन्न ही मानना होगा। क्योंकि साकार वस्तु कभी भी सर्वव्यापक नहीं हो सकती तथा कालपरिच्छिन्न वस्तु ईश्वर नहीं हो सकती। इसीलिए पातञ्जल योग का वचन है कि-

स एषः पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात्
(योगदर्शन १.२६)

आप और हम तो काल से परिछिन्न हैं। वसिष्ठ, विश्वामित्र, राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर स्वामी, ईसामसीह, दयानन्द सरस्वती, महात्मा गाँधी, साँईबाबा सभी की व्याख्या कालसापेक्ष है। राम युवाकाल में ऐसे थे, कृष्ण का बाल्यकाल ऐसा था, अफ्रीका में गाँधी जी ऐसे थे और १९४७ में वैसे। इस प्रकार सब की व्याख्या काल के आधार पर होती है। मिलने वाले लोग अक्सर कहा करते हैं कि दस वर्ष पहले आप ऐसे थे, बीस वर्ष पहले ऐसे। पर, क्या कभी किसी ने यह सुना या कहा कि १०० वर्ष पहले ईश्वर ऐसा था, १००० वर्ष या एक लाख वर्ष पहले ऐसा। यही अन्तर है पुरुष और परम पुरुष में। ईश्वर तो काल की सीमाओं से परे है। इसका अर्थ यह भी है कि जो काल की सीमाओं (जन्म व मरण) में बन्धा है, वह ईश्वर नहीं हो सकता और अनीश्वर की उपासना क्यों? इसलिए

thearyasamaj.org

सारे झगड़े का निपटारा तभी सम्भव है, जब यह माना जाए कि एक मात्र ईश्वर ही उपास्य है।

यदि हमारे पौराणिक मित्र यही कहते रहेंगे कि ईश्वर अवतार लेता ही है, तो यह फैसला कौन करे कि आज हम खरबों लोगों में ईश्वर कौन है। मुझे इसका समाधान भी नहीं मिल पाया कि यदि ईश्वर अवतार लेता भी है, तो उसकी यह जिद क्यों हैं कि मैं भारत में ही, भारत में भी केवल उत्तरप्रदेश और बिहार में ही, वहाँ भी केवल हिन्दुओं के घर ही अवतार (जन्म) लूँगा। यदि सारे जगत् का निर्माता और नियन्ता वही है तथा प्राणिमात्र उसकी सन्तान हैं तो सभी स्थानों (अमेरिका, ब्रिटेन, अरब देशों, रूस, ईराक, चीन आदि) तथा सभी सम्प्रदायों में उसका अवतरण होना चाहिए। इस प्रकर के अन्तहीन अथवा अनन्त प्रश्नों का एक ही समाधान है कि उस एक, अनादि, निर्विकार, सच्चिदानन्दस्वरूप ईश्वर को ही उपास्य माना जाए।

राम, कृष्ण, हनुमान जैसे दिव्य चरित्रों से सत्य, मर्यादा, कर्मनिष्ठा की प्रेरणा लेकर उनके प्रति अपना श्रद्धाभाव अर्पित करना चाहिए। मर्यादाओं का पालन राम की भक्ति है, निष्काम कर्मनिष्ठा कृष्ण की पूजा है, निःस्वार्थ सेवा हनुमान की अर्चना है, स्वदेश के लिए मर मिटना गुरु गोविन्द सिंह का तर्पण है और सत्यवेदार्थ का अनुशीलन ऋषि दयानन्द की उपासना है। यह सब उनके जीवन को समझने से ही होगा।

हम जानते हैं कि लोग उनके गीत गाया करते हैं, जिनका जीवन स्वार्थ से ऊपर उठकर सार्वजनिक हो जाता है। इसलिए जो हमारे लिए जीते हैं, उनका हम जन्मोत्सव मनाते हैं और जो हमारे लिए मरते हैं, उनका मृत्युदिवस (निर्वाण या शहीदी दिवस) मनाया जाता है। राम और कृष्ण के जीवन ने दूसरों को जीवन दिया, इसलिए आज भी रामनवमी और कृष्णजन्माष्टमी मनाई जाती है सरदार भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव जैसे वीरों ने हमारे लिए अपने प्राण न्यौछावर किए, इसलिए उनका बलिदान दिवस मनाया जाता है। ऋषि दयानन्द जीये भी हमारे लिए और मरे भी हमारे लिए, इसलिए उनका जन्मदिवस भी मनाया जाता है और निर्वाणदिवस भी।

इसलिए आइए, श्रद्धा और तर्क की नींव पर 'आस्था' का भव्य और सुदृढ़ प्रासाद तैयार करें, ताकि मनुष्यजाति में भेद और विरोध के स्वर मन्द पड़ जाएँ। ऋषि दयानन्द के शब्दों में हम इस बात के लिए तैयार हों कि समाज का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, मानसिक और सामाजिक उन्नति करना तथा वेद की भाषा में यह संकल्प रहे कि- सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।।

- अध्यक्ष, संस्कृत विभाग तथा अध्यक्ष, दयानन्द वैदिक अध्ययन पीठ, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

मनुष्यों को चाहिये कि अपने पुरुषार्थ से सुवर्ण आदि धन को इकट्ठा कर घोड़े आदि उत्तम पशुओं को रक्खें क्योंकि जब तक इस सामग्री को नहीं रखते तब तक गृहाश्रमरूपी यज्ञ परिपूर्ण नहीं कर सकते इसलिये सदा पुरुषार्थ से गृहाश्रम की उन्नति करते रहें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६३

जो नित्य पदार्थों में नित्य और स्थिरों में भी स्थिर परमेश्वर है, उस समस्त जगत् के उत्पन्न करने वाले परमेश्वर की प्राप्ति और योगाभ्यास के अनुष्ठान से ही ठीक-ठीक ज्ञान हो सकता है, अन्यथा नहीं।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.२५

छूट गये हैं पाप जिन के वे विद्वान् लोग अपनी विद्या के प्रकाश में जैसे ईश्वर के गुणों को देख के सत्य धर्माचारयुक्त होते हैं वैसे हम लोगों को भी होना चाहिये।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ६.५

जैसे गुण के ग्रहण करने वाले उत्तम गुणवान् विद्वान् का सेवन करते हैं, वैसे न्याय करने में चतुर राजा का सेवन प्रजाजन करते हैं, इसी से परस्पर की प्रीति से सब की उन्नति होती है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ६.७

thearyasamaj.org

वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत

वेदभाष्य, वेदभाषाभाष्य, मूलवेद, वेदांगप्रकाश और वैदिक साहित्य

पिछले अंक का शेष भाग.......

क्रमांक नाम पुस्तक	मूल्य
१८५. श्वसन क्रियाएं एवं प्राणायाम (सी.डी.)	
१८६. मोटापा (सी.डी.)	४०.००
१८७. योगनिद्रा (सी.डी.)	३०.००
१८८. ध्यान (सी.डी.)	
१८९. योगनिद्रा (कैसेट)	३०.००
१९०. ध्यान (कैसेट)	३०.००

श्री रावसाहब रामविलास शारदा

१९१. आर्य धर्मेन्द्र जीवन (सजिल्द) (स्वामी दयानन्द जी का जीवन चरित्र)	१००.००

डॉ. रामप्रकाश आर्य

१९२. महर्षि दयानन्द सरस्वती (जीवन एवं उनकी हिन्दी रचनाएं)	२५०.००

महर्षि गार्ग्य

१९३. सामपद संहिता सजिल्द (पदपाठः)	२५.००

डॉ. ब्रह्मानन्द शर्मा

१९४. वेदार्थ विमर्श: (वेदार्थ पारिजात खण्डनम्)	२५.००
१९५. डॉ. भवानीलाल भारतीय अभिनन्दन ग्रन्थ (बढ़िया)	५१.००
१९६. डॉ. भवानीलाल भारतीय अभिनन्दन ग्रन्थ (साधारण)	३१.००

महामहोपाध्याय पं. आर्यमुनि

१९७. वाल्मीकि रामायण–(सजिल्द) आर्य टीका सहित (प्रथम भाग)	१६०.००
१९८. वाल्मीकि रामायण–(सजिल्द) आर्य टीका सहित (द्वितीय भाग)	१६०.००

क्रमांक नाम पुस्तक	मूल्य
१९९. महाभारत आर्य टीका (प्रथम भाग)	२००.००
२००. महाभारत आर्य टीका (द्वितीय भाग)	२५०.००

Prof. Tulsi Ram

201. The Book Of Prayer (Aryabhivinaya)	35.00
202. Kashi Debate on Idol Worship	20.00
203. A Critique of Swami Narayan Sect	20.00
204. An Examination of Vallabha Sect	20.00
205. Five Great Rituals of the Day (Panch Maha Yajna Vidhi)	20.00
206. Bhramochhedan (New Edition)	25.00
207. Bhranti Nivarana	35.00
208. Atmakatha- Swami Dayanand Saraswati	20.00
209. Bhramochhedan	5.00
210. Chandapur Fair	5.00

DR. KHAZAN SINGH

211. Gokaruna Nidhi	12.00

DEENBANDHU HARVILAS SARDA

212. Life of Dayanand Saraswati	200.00

SWAMI SATYA PRAKASH SARASWATI

213. Dayanand and His Mission	5.00
214. Dayanand and interpretation of Vedas	5.00
२१५. पवित्र धरोहर (सी.डी.)	५१.००

आचार्य उदयवीर शास्त्री

२१६. जीवन के मोड़ (सजिल्द)	२५०.००

अन्य लेखकों के ग्रन्थ–निम्न पुस्तकों पर कमीशन देय नहीं है।

thearyasamaj.org

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
	श्री गजानन्द आर्य	
२१७.	वेद सौरभ	१००.००
२१८.	Gokarunanidhi (Eng.)	२५.००
	डॉ. सुरेन्द्र कुमार (भाष्यकार एवं समीक्षक)	
२१९.	मनुस्मृति	३००.००
२२०.	महर्षि दयानन्द वर्णित शिक्षा पद्धति	१५०.००
	सत्यानन्द वेदवागीशः	
२२१.	दयानन्द वेदभाष्य भावार्थ प्रकाश (उत्तरखण्ड)	३००.००
२२२.	दयानन्द वेदभाष्य भावार्थ प्रकाश (पूर्वखण्ड)	३५०.००
	डॉ. वेदपाल सुनीथ	
२२३.	माध्यन्दिन शतपथीय यूप ब्राह्मणों का भाष्य (अजिल्द)	५०.००
२२४.	शतपथ ब्राह्मण के पशुयाग का भाष्य (अजिल्द)	७०.००
२२५.	शतपथीययूप ब्राह्मण का भाष्य एवं शतपथ ब्राह्मण के पशुयाग का भाष्य (सजिल्द)	१५०.००
२२६.	यजुर्वेद-भाष्य विवरणम् (विशिष्ट संस्करण)	५०.००
२२७.	यजुर्वेद-भाष्य विवरणम् (साधारण संस्करण)	२५.००
	आचार्य सत्यव्रत शास्त्री	
२२८.	उणादिकोष	८०.००
२२९.	दयानन्द लहरी	५०.००
	प्रो. रामप्रसाद वेदालंकार	
२३०.	वेदाध्ययन (भाग-१)	६.००
२३१.	वेदाध्ययन (भाग-२)	७.००
२३२.	वेदाध्ययन (भाग-१०)	६.००
२३३.	प्रार्थना सुमन	४.००
२३४.	ईश्वर! मुझे सुखी कर	
२३५.	कौन तुझको भजते हैं?	८.००
२३६.	पावमानी वरदा वेदमाता	९.००
२३७.	प्रभात वन्दन	६.००

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
२३८.	भक्ति भरे भजन	११०.००
२३९.	विनय सुमन (भाग-३)	६.००
२४०.	वेद सुधा	८.००
२४१.	वेद पढ़ो और पढ़ाओ	१००.००
२४२.	वैदिक रश्मियाँ (भाग-२)	६.००
२४३.	वैदिक रश्मियाँ (भाग-३)	५.००
२४४.	वैदिक रश्मियाँ (भाग-४)	९.००
२४५.	वैदिक रश्मियाँ (भाग-५)	६.००
२४६.	Quest for the Infinite	20.00
२४७.	वैदिक आदर्श परिवार (बड़ा आकार)	१५०.००
	श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु	
२४८.	गंगा ज्ञान धारा (भाग-१)	
२४९.	गंगा ज्ञान धारा (भाग-२)	१६०.००
२५०.	गंगा ज्ञान धारा (भाग-३)	१७०.००
२५१.	अमर कथा पं. लेखराम	६०.००
२५२.	कवि मनीषी पं. चमूपति	१६०.००
२५३.	कुरान सत्यार्थ प्रकाश के आलोक में	२००.००
२५४.	निष्कलंक दयानन्द	१६०.००
२५५.	मेहता जैमिनी	१५०.००
२५६.	कुरान वेद की छांव में	१५०.००
२५७.	जम्मू शास्त्रार्थ	३०.००
२५८.	महर्षि दयानन्द का प्रादुर्भाव	२०.००
२५९.	श्री रामचन्द्र के उपदेश	२५.००
२६०.	धरती हो गई लहुलुहान	३०.००
	विविध ग्रन्थ	
२६१.	नित्यकर्म विधि तथा भजन कीर्तन	२०.००
२६२.	उपनिषद् दीपिका	७०.००
२६३.	आर्य समाज के दस नियम	१०.००
२६४.	मद्यनिषेध शिक्षित शतकम्	१५.००
२६५.	आर्यसमाज क्या है ?	८.००
२६६.	जीवन का उद्देश्य	२०.००

thearyasamaj.org

२६७.	वेदोपदेश	३०.००
२६८.	सत्यार्थ प्रकाश का समीक्षात्मक अध्ययन	२०.००
२६९.	भगवान् राम और राम-भक्त	२५.००
२७०.	जीवन निर्माण	२५.००
२७१.	१०० वर्ष जीने के साधन नित्यकर्म	२५.००
२७२.	दयानन्द शतक	८.००
२७३.	जागृति पुष्प	८.००
२७४.	त्यागवाद	२५.००
२७५.	भस्मान्तं शरीरम्	८.००
२७६.	जीवन मृत्यु का चिन्तन	२०.००
२७७.	ब्रह्मचर्य का वैज्ञानिक स्वरूप	१०.००
२७८.	कर्म करो महान बनो	१४.००
२७९.	अष्टाध्यायी सूत्रपाठ	५०.००
२८०.	आनन्द बहार शायरी	१५.००
२८१.	वैदिक वीर गर्जना	२५.००
२८२.	पर्यावरण विज्ञानम्	२०.००

DR. HARISH CHANDRA

283	The Human Nature & Human Food	12.00
284.	Vedas & Us	15.00
285.	What in the Law of Karma	150.00
286.	As Simple as it Get	80.00
287.	The Thought for Food	150.00
288.	Marriage Family & Love	15.00
289.	Enriching the Life	150.00

डॉ. वेदप्रकाश गुप्त

२९०.	दयानन्द दर्शन	६०.००
२९१.	Philoshophy of Dayanand	150.00
२९२.	महर्षि दयानन्द का समाज दर्शन	२०.००

श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज

२९३.	आर्य सिद्धान्त और सिख गुरु	६०.००
२९४.	आध्यात्मिक चिन्तन के क्षण (आचार्य सत्यजित् जी)	४०.००

पुस्तक - समीक्षा

पुस्तक का नाम - ऋषि दयानन्द का तत्त्व दर्शन
मूल लेखक - पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय
अनुवादक - डॉ. रूपचन्द्र दीपक
प्रकाशक - विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८, नई सड़क, दिल्ली-११०००६
मूल्य - ३००/- पृष्ठ संख्या - ३६६

विश्व में दर्शनों के सन्दर्भ में ख्याति प्राप्त नाम भारत का है। विश्व में प्लेटो, अरस्तू के दर्शनों की कालावधि मात्र ३००० वर्ष पुरानी है। दर्शन व धर्मों का प्रादुर्भाव हुआ। यहूदी, ईसाई, इस्लाम का प्रभाव सम्पूर्ण विश्व पर पड़ा, प्राचीन युगों को प्रागैतिहासिक कहना पर्याप्त है। विश्व की धरा पर प्राचीन दर्शन याज्ञवल्क्य व जनक का था जो गौतम बुद्ध व महावीर से अति प्राचीन है। यूनानी दर्शन की धूम अल्पकाल रही फिर लुप्त प्रायः हो गई। दर्शनों का स्थान कतिपय देशों में रहा है। धार्मिक कथाएँ क्या हैं, उनका उद्‌भव दार्शनिक आधार पर ही सम्भव है, इसके अभाव में अंकुरित होना कदापि सम्भव नहीं। किसी घटना के घटने से कथायें निर्मित होती हैं वह सत्य से परे काल्पनिक भी हो सकती है। अर्थ व भाव को न समझ कर कथा रच दी जाती है। भक्त व भावुक उस धारा में बह जाते हैं। अधिकांश खोजें पुनरावृत्ति मात्र है।

महर्षि दयानन्द ने नवीन दर्शन को जन्म नहीं दिया किन्तु उनका वर्चस्व इस क्षेत्र में कम नहीं है। प्रकृति के नियम विषयक उनकी अवधारणा चक्रगामी है। इतिहास इसी तथ्य को दोहराता है। ऋषि दयानन्द के अधिकांश ग्रन्थ हिन्दी भाषा में हैं, यह भाषा विदेशी प्रभाव से उपेक्षित रही है। लेखक गुरुतर भार को कम करने का प्रयास रूप बीड़ा उठा रहे हैं। यह ऋण सम्पूर्ण मानवता वाद पर है। लेखक ने १. जीवन-वृत्त, २. ज्ञान का अर्जन, ३. ईश्वर का स्वरूप, ४. जीव और जीवन, ५. प्रकृति अर्थात् पदार्थ, ६. आत्मा का नित्यत्व-अमरत्व, ७. आचार-शास्त्र के तत्त्व, ८. हमारे नैतिक गुण, ९. समाजशास्त्र और राजनीति आदि के आधर पर ऋषि दयानन्द के तत्त्व दर्शन का सारगर्भित विवेचन सरल व ग्राह्य भाषा में किया है। पं. गंगाप्रसाद जी उपाध्याय स्वयं महान विद्वान् है। उनकी लेखनी में जादूई गुण है। ऋषि के ऋण से उऋण होने के लिए कठोर परिश्रम किया है। पाठक सम्पूर्ण पुस्तक का अध्ययन व आत्मसात कर ऋषि के तत्त्वदर्शन को भली-भांति समझ पायेंगे। मूल लेखक व अनुवादक को साधुवाद है- तत्त्वदर्शन की सम्पूर्ण सामग्री प्रस्तुत की है।

- देवमुनि, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

thearyasamaj.org

शिविरार्थी का मनोगत

– नलिनी माधव देशपाण्डे

उद्यानं ते पुरुष नावयानम्।

अक्टूबर २०१४ में ऋषि उद्यान में आयोजित योग शिविर के अनुभव

अच्छी विद्या आजकल के मार्केट में धन कमाने के रेस में नहीं चलती। क्योंकि जिनके मन पर इस विद्या का धुन रहती है वह धन कमाने में उदासीन रहते हैं। दूसरी बात विज्ञान जिन्होंने पढ़ा है वह संस्कृत नहीं जानते और जो संस्कृत जानते हैं, वेद जानते हैं, वह भौतिक विज्ञान नहीं पढ़ते। अगर राष्ट्र की उन्नति हम चाहते हैं तो दोनों ब्राह्मशक्ति और क्षात्रशक्ति एक जुट होकर लड़े, तो ही आत्मकल्याण हो सकता है।

दिनचर्या को ठीक रखना, सात्विक शुद्ध आहार, गाय का दूध, पीना। प्रात: समय पर उठके ध्यान, उपासना, व्यायाम करना।

मुझे पीछे मुड़कर देखने पर, इसकी आवश्यकता आज निरन्तर महसूस हो रही है। पुराने जमाने में सड़के कच्ची, मकान कच्चे रहते थे पर इंसान पक्के होते थे। आजकल इससे विपरीत है। सड़कें पक्की, इमारतें पक्की, लेकिन इन्सान कच्चे हो गए हैं। पहले बाहर के साधन कम थे, अन्दर की शक्ति ज्यादा थी आजकल बाहर के साधन बहुत बढ़ गए लेकिन अन्दर की शक्ति कम होते दिखाई दे रही है। जिनको संस्कार देना चाहिए उनके पास समय नहीं है। इसीलिए आजकल संस्कार केन्द्र खोले जा रहे हैं।

एक बार रेल यात्रा में साथ में बोहरी समाज के लोग यात्रा कर रहे थे। उनकी महिला ने बताया कि हमारे यहाँ धर्म की प्राथमिकता है। बच्चा स्कूल से लौटकर थोड़ा-बहुत खाकर पुन: मदरसा जायेगा, यह अनिवार्य है। ऐसे ही टाईमपास या चेंज के लिए नहीं। वहाँ सारी धार्मिक विद्या पढ़ता है, सप्ताह में एक बार परीक्षा भी ली जाती है। इससे मुझे यह शिक्षा मिली, मैं कम से कम दो बार शिविर में जाकर सीखूँ।

इतिहास के पन्ने खोलें, तो यहीं शिवाजी पैदा हुये, यहीं जिजाऊ हो गयी। यहीं राजस्थान की भूमि पर पन्नाधायी जिसने राजपरिवार को बचाने के लिए अपने पुत्र की कुर्बानी दी। यहीं राजबाला, यहीं झाँसी की रानी।

२१वीं सदी में इंदिरा गाँधी, किरण बेदी, यहीं नमक, अन्न, हवा, पानी पीके जिये हैं।

शिविर काल में मौन के कारण अन्दर चिन्तन करने का समय मिल जाता था। यह जीवन क्या है, हम किसलिए आए हैं, हमें करना क्या है? हम सही दिशा में जा रहे हैं क्या? यहीं अन्न, जल लेकर सारे ब्रह्मचारी ५ वर्ष में दर्शन, अष्टाध्यायी, निरुक्त पढ़ लेते हैं। मुश्किल कुछ नहीं सभी के लिए २४ घण्टे समय है। मन में कुछ करने की दृढ़ता और तड़प चाहिए। ब्रह्मचारी, सारे आचार्य, स्वामी जी महाराज इन सभी को देखकर, कितना समय मैं किस चीज में लगाऊँ, कितने समय का सदुपयोग कर सकूँगी यह भाव जागा।

समर्थ रामदास गुरु, जो शिवाजी राजा के गुरु, उन्हीं का मराठी ग्रन्थ का एक श्लोक याद आ रहा है, ''रायाचे सन्निह राहता। सहजति लाभे श्रीमंता।'' जिस संगति में रहो उसी के गुण धारण होते हैं, ध्यान मार्ग से ईश्वर की संगति में रहो तो ईश्वर जो सर्वाधार, सर्वशक्तिमान् उसी की संगत में रहूँ तो उसके गुण आयेंगे। उस सर्वशक्तिमान् की छाया में रहेंगे, तो जीवन कुन्दन बनेगा।

शिविर और ऋषि मेले से हमें और सीखने को मिला। घर में दो महिलाएँ (सास-बहू) (नणद-भावज) मुश्किल से एकत्र रहते हैं। दो विद्वान् मुश्किल से एकत्र रहते हैं। पर यहाँ बहुत सारे विद्वान् अच्छी तरह से एक दूसरे को सहयोग, सम्मान देते दिखाई देते हैं।

मेले के समय देखा है यह अनुशासन।

स्वामी विष्वङ् जी:- इतनी भीड़ में अपने कमरे में रहते हुए मेले का संचालन करते हैं। इससे पता चलता है कि इसके पृष्ठ भाग में सुनियोजित बुद्धि काम कर रही है।

आचार्य सोमदेव जी:- नाम से ही सौम्य हमेशा, कभी थके नहीं। सभी को साथ लेकर सुचारु संचालन करते हुये, जिनकी वाणी में आर्द्रता, तड़प जिनके विचार अंत:करण को छू जाते हैं।

प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु जी:- इनका जोश और होश देखकर इनकी इतिहास की जानकारी, क्रान्तिकारियों का इतिहास सुनकर आंखें भर आती हैं। उनका व्याख्यान होने

thearyasamaj.org

पर मैंने उनके पैर छूएँ। उनकी लम्बी आयु की कामना की।

मन्त्री ओममुनि जी:- वाणी ही हथियार है। विचार प्रगट करने के लिए वाणी में मीठास हो और दृष्टि में प्यार हो सभी के गुणग्राही है और आश्रम के लिए धनसंग्रह बहुत सुचारु रूप से करते दिखायी दिते हैं।

डॉ. आचार्य धर्मवीर जी:- इनके हम किस सम्बोधन से कहे, जिनका व्यक्तित्व अष्टपैडू है। इनकी पैदा करने वाले माता-पिता को मेरा नमन। जो विनम्रता की मूर्ति, ज्ञान भण्डार के प्रदाता, समस्या के निवारक, सबका साथ, सबका विकास को लेके चलने वाले दाता को कोटि-कोटि धन्यवाद। जैसे लता मंगेशकर ने कंठ पाया, वैसे ही इन्होंने कहाँ से बुद्धि पायी। परोपकारिणी का अग्रलेख तो इनकी लेखनी अष्टावधानी। ज्ञान का निचोड हैं। ऐसे सारे दिग्गज विद्वानों के दर्शन हुये।

इतना ही नहीं हम अबला पर तेरे तो बहुत उपकार है, हे महर्षि दयानन्द! **तूने मुझमें भी मैत्रेयी गार्गी को जगाया, तूने वेदों का अधिकार दिया, यज्ञ का अधिकार दिया, तूने बाल विवाह रोका, तूने विधवा विवाह का उद्धार किया। ऐसे मेरे ऋषिवर! तेरे हम पर अनन्त उपकार हैं। तूने सत्यार्थप्रकाश दिया, वेदों का उद्धार किया। जीवन में यदि कुछ ज्यादा कर ना सके, कम से कम तेरे दिए १० नियमों का पालन कर सकें, तो बाद में पछताना ना पड़े। जीवन को धन्य समझूँगी। स्वयं को कृतकृत्य समझूँगी।**

- रो हाऊस नं. ३, पिंपले सौदागर, पुणे-४११०२७ (महा.)

सत्यार्थ प्रकाश का प्रचार प्रसार

गत विश्व पुस्तक मेले में सभा द्वारा पांच हजार सत्यार्थप्रकाश (हिन्दी), दो हजार सत्यार्थप्रकाश (अंग्रेजी), ऋषि दयानन्द की जीवनी पाँच हजार, दो हजार सी.डी. का नि:शुल्क वितरण किया। जिसकी सज्जनों द्वारा बहुत प्रशंसा की गई। अब सज्जनों का फिर उसी प्रकार के कार्यक्रम की मांग कर रहे हैं।

इस बार सभा ने कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए सत्यार्थप्रकाश को चार भाषाओं में वितरित करने की योजना बनाई है, क्रमश: हिन्दी, अंग्रेजी, पंजाबी, उर्दू का सत्यार्थप्रकाश प्रकाशन की प्रक्रिया में है।

ऋषि जीवनी भी अंग्रेजी, हिन्दी दोनों भाषाओं में तैयार कराई जा रही है। सभी धर्मानुरागियों से निवेदन है, इस कार्य के लिए आप जितना अधिक सहयोग प्रदान करेंगे। सभा उतने ही विशाल रूप में इस कार्यक्रम को सम्पन्न करेगी। पूर्व की भाँति आपका सहयोग व समर्थन प्राप्त होगा।

सहयोग राशि निम्न क्रमांक के खातों में जमा कराई जा सकती है अथवा बैंक ड्राफ्ट, चेक द्वारा प्रेषित कर कार्यालय में जमा कराई जा सकती है।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर। IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या -10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर। IFSC - SBIN0007959

मनुष्यों को युक्ति और विद्या से सेवन किये हुए सब सृष्टिस्थ पदार्थ शरीर, आत्मा और सामाजिक सुख कराने वाले होते हैं।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५७

जो विद्वान् लोग परोपकार बुद्धि से विद्या का विस्तार करने, सुगन्धि, पुष्टि, मधुरता रोगनाशक गुणयुक्त पदार्थों का यथायोग्य मेल अग्नि के बीच में उनका होम कर शुद्ध वायु वर्षा का जल वा ओषधियों का सेवन करके शरीर को आरोग्य करते हैं वे इस संसार में अत्यन्त प्रशंसा के योग्य होते हैं।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५८

यज्ञ आदि व्यवहारों के बिना गृहाश्रम में सुख नहीं होता। **-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५९**

thearyasamaj.org

दक्षिण में बलिदानी परम्परा के ७५ वर्ष
हुतात्मा वेदप्रकाश की बलिदान स्थली 'गुंजोटी'

- डॉ. नयनकुमार आचार्य

हैदराबाद स्वतन्त्रता संग्रामकालीन 'गुंजोटी' ग्राम को इतिहास में अनन्यसाधारण महत्त्व है। उस समय यह स्थान क्रान्तिकारियों का केन्द्र माना जाता था। आर्य युवक वेदप्रकाश आर्य जैसे क्रान्तिकारी का बलिदान इसी भूमि में हुआ हैं। यहाँ के अनेकों वीरों ने निज़ाम के अत्याचारी रजाकारों का बड़े शौर्य के साथ मुकाबला किया और यह संघर्ष काफी दिनों तक चलता रहा। उस समय गुंजोटी को जिले का दर्जा था। निज़ाम काल में सारी गतिविधियाँ यहीं से चलती थी। यहाँ के आर्यवीरों ने बड़े पुरुषार्थ से आर्यसमाज का भवन बनवाया। दुर्भाग्य से रजाकारों के अपने अधिकारों के चलते इस समाज के भवन को बलात् मस्जिद का रूप दिया। तब आर्यों ने अपना संघर्ष जारी रखा। स्थानीय कर्मठ आर्य कार्यकर्त्ता स्वामी व्रतानन्द जी (पूर्वाश्रम दिगम्बर राव जी देशमुख) ने मुम्बई हाईकोर्ट तक अपने निजी खर्चे से यह केस लड़ा और फैसला अन्त में अपने पक्ष हो गया। स्वामी जी के अथक प्रयासों से 'आर्यसमाज गुंजोटी' स्वतन्त्र हो गया। सम्प्रति यह स्थान महाराष्ट्र के उस्मानाबाद जिले में उमरगा तहसील के अन्तर्गत आता है, जो कि उमरगा से मात्र १० कि.मी. दूरी पर है।

कई दिनों से आर्यसमाज का भवन जर्जर हो चुका था। १९९३ में इस परिसर में हुए भूकम्प विपदा से भवन की और भी अधिक दयनीय अवस्था हुई। इसी ग्राम के समीप ही औराद नामक गाँव के निवासी हैं पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द जी (हरिश्चन्द्र गुरु जी) इन्हीं की तपस्या व साधना से अनेकों नवयुवक आर्य विचारों व वैदिक सिद्धान्तों की ओर आकृष्ट हुए। स्वामी जी की प्रबल इच्छा थी कि हुतात्मा वेदप्रकाश के नाम से प्रसिद्ध आर्यसमाज गुंजोटी के भवन का जीर्णोद्धार हो। तब महाराष्ट्र सभा के नेतृत्व में आर्यसमाज गुंजोटी के पदाधिकारियों के पूर्ण सहयोग से भवन निर्माण कार्य शुरू हुआ। सर्वश्री स्वामी श्रद्धानन्द जी, डॉ. ब्रह्ममुनि जी, लखमसीभाई वेलानी, दयाराम बसैये बन्धु, काशिनाथ राव कदेरे, दिनकर राव देशपाण्डे, महाळधा दुधभाने, बेकमकर आदि आर्य कार्यकर्त्ताओं ने बड़े पुरुषार्थ से एक वर्ष के भीतर इस आर्यसमाज का बांधकाम पूर्ण किया। इसके लिए अनेकों दान-दाताओं ने उदारता के साथ आर्थिक सहयोग देकर हुतात्मा वेदप्रकाश के प्रति अपनी सहृदय श्रद्धाञ्जलि अर्पित की है।

अब दि. २४, २५ व २६ नवम्बर को गुंजोटी में बड़े पैमाने पर हुतात्मा वेदप्रकाश बलिदान समारोह के साथ ही आर्यसमाज गुंजोटी के जीर्णोद्धार भवन का उद्घाटन समारोह सम्पन्न हुआ। इस उपलक्ष्य में यजुर्वेद पारायण यज्ञ, छात्र प्रतियोगिताएँ व कार्यकर्त्ता अभिनन्दन कार्यक्रम भी हुए। इस भव्य समारोह में आर्य जगत् के तपोनिष्ठ संन्यासी पूज्य आचार्य बलदेव जी, स्वामी धर्मानन्द जी (ओडीशा), वैदिक विद्वान् प्रा. राजेन्द्र जी जिज्ञासु, परोपकारिणी सभा के कार्यकारी प्रधान प्रो. धर्मवीर जी, सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री श्री प्रकाश जी आर्य, आर्य भजनोपदेशक पं. सुरेन्द्रपाल जी आर्य, पं. भानुप्रकाश जी शास्त्री आदि पधारे।

- परली, वैजनाथ

जो ईश्वर वेदविद्या से अपने सांसारिक जीवों और जगत् के गुण, कर्म्म, स्वभावों को प्रकाशित न करता तो किसी मनुष्य को विद्या और इन का ज्ञान न होता और विद्या वा उक्त पदार्थों के ज्ञान के बिना निरन्तर सुख क्यों कर हो सकता है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५४

तर्क के बिना कोई भी विद्या किसी मनुष्य को नहीं होती और विद्या के बिना पदार्थो से उपयोग भी कोई नहीं ले सकता।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५६

thearyasamaj.org

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग एक वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ नि:शुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम- **भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**

बैंक बचत खाता (Savings) संख्या- **10158172715**

IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम- **आई.डी.बी.आइ**, पावर हाऊस के सामने, जयपुर रोड़, अजमेर।

बैंक बचत खाता (Savings) संख्या- **091104000057530**

IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन-जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग-यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था-भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था-भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर** के वेद-प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ्** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित्** के उपनिषद् प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं। इसी प्रकार आगे भी 'आस्था-भजन' पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे के बीच अन्य विद्वानों के व अन्य विषयों पर प्रवचन प्रसारित होते रहेंगे।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था-भजन' (चैनल) डिश-टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा-स्काई, वीडियोकोन, बिग-टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार-बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

thearyasamaj.org

राजस्थान के गौरव राजस्थानी भाषा के कवि उमरदान जी का अमर काव्य हमें परोपकारिणी सभा के सम्माननीय सदस्य डॉ. खेतलखानी जी की कृपा से प्राप्त हुआ। इस पुस्तक का तीसरा संस्करण १९३० में प्रकाशित हुआ था। इसमें उमरदान जी की अनेक रचनाओं का संग्रह है। इस पुस्तक के पृष्ठ संख्या ६० से ९४ तक 'दयानन्द री दया' नाम से उनकी रचना प्रकाशित है। कवि और काव्य दोनों ही महत्त्वपूर्ण होने से पाठकों के लाभार्थ दयानन्द दर्शन को प्रकाशित कर रहे हैं। यह एक इतिहास का भाग है। पाठक लाभ उठा सकेंगे। - सम्पादक

ओ३म्

ऊमर-काव्य

[चारण-कुल-भूषण महाकवि ऊमरदानजी लालस कृत]

अथ ईश्वरस्तुति

(छन्द छप्पय)

नमः सच्चिदानन्द भक्तवत्सल भयहरता,
शाश्वत¹ अशरण शरण करण कारण जगकरता।
निराकार निर्लेप निगम निरदोष निरंजन,
ईश्वर दीनदयालु देव दुख-दारिद²—भंजन।
अखिलेश अनूपम एक अज³,
अजरामर महिमा अजय।
नित निर्विकार निरभय निपुण,
नारायण करुणानिलय ॥ १ ॥

१—निरन्तर। २—दरिद्र। ३—अजन्मा।

theraryasamaj.org

भूमिका

ऊमर काव्य का यह तीसरा संस्करण आज आपकी सेवा में उपस्थित किया जाता है। यह काव्य कितना रोचक, मधुर, ललित, आकर्षक, उपदेशप्रद एवं उपयोगी है यह तो आप इसे पढ़ कर ही जान सकेंगे। यह अपने अनेक गुणों के कारण ही अत्यन्त लोकप्रिय बन गया है। एक मारवाड़ी कवि की ओजस्विनी प्रतिभायुक्त कला का यह एक सजीव नमूना है। इसमें न केवल समाज सुधार का ही विवेचन है बल्कि सभी रसों की मधुर धारा बहती दिखाई पड़ती है। विशेषतः वीर और हास्यरस का विशद वर्णन है। कवि ने अपने काव्य में तत्कालीन परिस्थिति का भी अच्छा चित्र खींचा है।

कवि ऊमरदान जी लालस के लिये काव्य निर्माण वंशानुगत गुण था और वे थे भी जन्म-सिद्ध कवि (Born Poet)। उनमें वे सभी गुण थे जो प्रतिभाशाली कवियों में होने चाहियें। वे सदैव आनन्दित रहा करते थे। एक बार सं० १९५७

thearyasamaj.org

में कवि ऊमरदान उदयपुर-मेवाड़ गये। वहाँ उनकी सुप्रसिद्ध इतिहासवेत्ता महामहोपाध्याय रायबहादुर श्री गौरीशङ्कर हीराचन्दजी ओझा से विक्टोरिया हॉल (अजायब घर) में पहली बार मुलाकात हुई। ~~ओझाजी ने जब प्रश्न किया~~

Ajmer.

Mahamahopadhyaya,
Rai Bahadur
Gaurishankar H. Ojha.

Dated १०-४-१९३० 193

कविवर ऊमरदानजी से मेरा प्रथम मिलना उदयपुर के विक्टोरिया हॉल में हुआ था, जब मैंने उनका शुभ नाम पूछा तो उन्होंने हँसते हुए कहा "मेरा नाम डेली डिलाइटफुल ऊमरदान है"। उनकी मुखमुद्रा पर से यह झलक आता था कि वे सदा प्रसन्नचित्त रहते हैं अतएव उनका डेली डिलाइटफुल कथन सार्थक है। ऐसे सहृदय कवि से वार्तालाप करने तथा उनकी मनोहारिणी कविता सुनने में मुझे बड़ा आनन्द आता था जिससे उनके साथ मेरा स्नेह बढ़ता ही गया। वे जन्मसिद्ध आशु कवि थे और उनकी राजस्थानी भाषा की कविता सरस, सरल एवं चित्ताकर्षक होने से ही वे जहाँ जहाँ गये वहाँ उनका बहुत कुछ आदर हुआ। उनके काव्यों का राजपूताने में बड़ा आदर है और लोग उन्हें बड़े उत्साह के साथ पढ़ते हैं।

गौरीशंकर हीराचंद ओझा

thearyasamaj.org

~~मुलाकात हुई।~~ ओझाजी ने जब प्रश्न किया कि "श्रीमान् का शुभ नाम क्या है?" तब उन्होंने तत्काल ही अंग्रेजी में अपना नाम "डेली डिलाइट फुल उम्मरदान" (Daily delightful Ummaidan) कहा। इस पर से ही अनुमान हो सकता है कि वे कितने मौजी और आनन्दी थे, जो अपने को अंग्रेजी में "सदा आनन्दी उम्मरदान" कहते थे। ओझा जी से पहली मुलाकात और उसी में इस प्रकार खुला व्यवहार कवि के आनन्दी होने का परिचय देता है। ऊमरदान जी को इतिहास और प्राचीन काव्य ग्रन्थों की खोज करने की रुचि थी। वीरशिरोमणि महाराणा प्रताप की वीरता की प्रशंसा में उन्हीं के समकालीन चारण कवि दुरसा आढ़ा ने "विरुद छिहत्तरी" नाम का ७६ सोरठों वाला एक काव्य बनाया था जिसके कई सोरठे इस समय राजपूतों, चारणों व बड़वा-भाटों आदि के मुख से सुनने में आते हैं। उस

शेष भाग अगले अंक में......

thearyasamaj.org

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रात: एवं सायं दैनिक यज्ञ- प्रवचन, वेद-पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***- आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति नि:शुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***- अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था नि:शुल्क की जाती है। ***गोशाला***- गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का नि:शुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***- वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा नि:शुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***- इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ नि:शुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***- योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में नि:शुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है; निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अत: आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

thearyasamaj.org

अतिथि यज्ञ के होता

(१ से १५ दिसम्बर २०१४ तक)

१. श्री रजनीश कपूर, नई दिल्ली २. डॉलर फाउन्डेशन, कोलकाता ३. श्री देवमुनि, अजमेर ४. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर ५. श्री किशोर काबरा, अजमेर ६. श्री छज्जुराम कोकचा, कोटपुतली, राज. ७. श्री सुशील आनन्द, मुम्बई, महा. ८. श्री रामचन्द्र सुथार, सोलापुर, महा. ९. स्वामी देवेन्द्रानन्द, अजमेर १०. श्रीमती मेहता माता, अजमेर ११. श्री भूषण वर्मा, बुलढ़ाणा, महा. १२. श्री राहुल आर्य, अकोला, महा. १३. श्री सुभाषचन्द गुप्ता, अजमेर १४. राष्ट्रीय गौशाला, हिसार, हरि. १५. श्रीमती किरण कुलश्रेष्ठ, जोधपुर, राज. १६. श्री शामयू कुमार, पटना, बिहार १७. श्रीमती कुमुदिनी आर्या, अजमेर १८. श्री प्रभुलाल कुमावत, किशनगढ़, राज. १९. श्रीमती निर्मला गुप्ता, अजमेर २०. श्री देवानन्द आर्य, बलागिंर, ओडिशा २१. श्री हरिकिशन शास्त्री, गुड़गाँव, हरि. २२. श्री कृष्णकुमार, नारनौल, हरि. २३. श्री ओमवीर सिंह, जयपुर, राज. २४. श्री रमेशमुनि, अजमेर २५. श्री एम.एल. गोयल, अजमेर २६. श्री विनय कुमार झा, जयपुर, राज. २७. श्रीमती कमलेश गुप्ता, जम्मू।

– परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तक अतिथियों में नि:शुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौओं को उत्तम चारा मिले इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चेक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएंगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(१ से १५ दिसम्बर २०१४ तक)

१. श्रीमती कमला देवी पंचोली, अजमेर २. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर ३. श्री शान्तिस्वरूप टिक्कीवाल, जयपुर, राज. ४. श्री विरदीचन्द गुप्ता, जयपुर, राज. ५. कै. चन्द्रप्रकाश त्यागी, हरिद्वार, उत्तराखण्ड ६. श्रीमती गीता, नई दिल्ली ७. श्री श्रीधर, कांचीपुरम्, तमिलनाडु ८. श्री मंयक, अजमेर ९. श्रीमती प्रेमलता, अजमेर १०. श्री किशनलाल, अजमेर ११. श्री अमृत गर्ग, फरीदाबाद, हरि. १२. श्री कुदरत सिंह, हिसार, हरि. १३. श्री नवकेश, अजमेर १४. श्री श्याम सुन्दर शर्मा, अजमेर १५. श्रीमती संजना मालू, किशनगढ़, राज. १६. श्री ओममुनि, ब्यावर, राज. १७. श्री प्रभुलाल कुमावत, किशनगढ़, राज. १८. श्री लक्ष्मणप्रसाद द्विवेदी, अजमेर १९. श्री प्रदीप शर्मा, अजमेर २०. आर्यसमाज विजयनगर, राज. २१. श्री अमित मालू, किशनगढ़, राज. २२. श्रीमती सुमित्रा आर्या, अजमेर २३. श्री मधुसूदन तोषनिवाल, अजमेर २४. श्रीमती वेदवती कुशलदेव कापसे, नान्देड़, महा. २५. श्री प्रेमचन्द अग्रवाल, पंचकूला, हरि. २६. श्री विजय कुमार झा, जयपुर, राज. २७. श्री प्रेम दुग्गल, सूरत, गुज. २८. श्री आशीष सिंह कटारिया, अजमेर २९. सुश्री कविता अग्रवाल, अजमेर।

– परोपकारिणी सभा, अजमेर।

जैसे विद्वान् लोग ईश्वर की सृष्टि में विद्या से पदार्थों की परीक्षा करके कार्य्यों में उपयोग कर सुखों को प्राप्त करते हैं वैसे ही सब मनुष्यों को इस यज्ञ का अनुष्ठान कर सब सुखों को पहुँचाना चाहिये।

–महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.२२

thearyasamaj.org

जिज्ञासा समाधान - ७८

- आचार्य सोमदेव

जिज्ञासा- मैं परोपकारी का लगभग ३० वर्षों से नियमित पाठक हूँ। आपसे मैं आशा करता हूँ कि तथाकथित असामाजिक तत्त्वों व संगठनों द्वारा आर्यसमाज व महर्षि दयानन्द की विचारधारा पर किए जा रहे हमलों व षड्यन्त्रों का आप जवाब ही नहीं देते, उन्हें शास्त्रार्थ के लिए चुनौती देने में भी सक्षम हैं। ऐसी मेरी मान्यता है। ऐसे ही एक पत्र मेरे (आर्यसमाज सोजत) पते पर दुबारा डाक से प्राप्त हुआ है। इस पत्र की फोटो प्रति मैं आपकी सेवा में प्रस्तुत कर रहा हूँ। यह पत्र ब्रह्माकुमारी संस्था से जुड़ा किसी व्यक्ति का है, मैंने उससे फोन पर बात भी की है तथा उसे कठोर शब्दों में आमने-सामने बैठकर चर्चा के लिए चुनौती दी है। परन्तु फोन पर उसने कोई जवाब नहीं दिया।

आपकी जानकारी हेतु पत्र की फोटो प्रति पत्र के साथ संलग्न है। पत्र लिखने वाले ने नीचे अपना नाम के साथ चलभाष संख्या भी लिखी है। कृपया आपकी सेवा में प्रस्तुत है -

धर्माचार्य जानते हैं कि वे भगवान् से कभी नहीं मिले, वे यह भी जानते हैं कि वेदों शास्त्रों द्वारा भगवान् को नहीं जाना जा सकता, फिर यह किस आधार से भगवान् को सर्वव्यापी कहते हैं? कुत्ते बिल्ली में भी भगवान् हैं, ऐसा कहकर, भगवान् की ग्लानि क्यों करते हैं? यदि इन्हें कोई कुत्ता कहे तो कैसा लगेगा? धर्माचार्य यह भी कहते हैं कि सब ईश्वर इच्छा से होता है। जरा सोचे! कि क्या छः माह की बच्ची से बलात्कार, ईश्वर इच्छा से होता है? क्या यही है ईश्वर इच्छा? अरे मूर्खों, निर्लज्जों, राम का काम, रामलीला करना है या रावण लीला? राम की आड़ में रावण लीला करने वाले राक्षसों, सम्भल जाओ, क्योंकि राक्षसों से धरती को मुक्त कराने राम आए हैं।

-अर्जुन, दिल्ली, मो.-०९२१३३२४१३४

- हीरालाल आर्य, मन्त्री आर्यसमाज सोजत नगर, जि. पाली, राज.-३०६१०४

समाधान- वर्तमान में भारत देश के अन्दर हजारों गुरुओं ने मत-सम्प्रदाय चला रखे हैं, जो कि प्रायः वेद विरुद्ध हैं। ईसाई, मुस्लिम, जैन, बौद्ध, नारायण सम्प्रदाय, रामस्नेही सम्प्रदाय, राधास्वामी, निरंकारी, धन-धन सतगुरु (सच्चा सौदा), हंसा मत, जय गुरुदेव, सत्य साईं बाबा, आनन्द मार्ग, ब्रह्माकुमारी आदि मत ये सब वेद विरोधी हैं। सबके अपने-अपने गुरु हैं, ये सम्प्रदायवादी ईश्वर से अधिक महत्त्व अपने सम्प्रदाय के प्रवर्तक को देते हैं, वेद से अधिक महत्त्व अपने सम्प्रदाय की पुस्तक को देते हैं।

आपने ब्रह्माकुमारी के विषय में जानना चाहा है। ब्रह्माकुमारी मत वाले हमारे प्राचीन इतिहास व शास्त्र के घोर शत्रु हैं। इस मत के मानने वाले १ अरब ९६ करोड़ ८ लाख, ५३ हजार ११५ वर्ष से चली आ रही सृष्टि को मात्र ५ हजार वर्ष में समेट देते हैं। ये लाखों वर्ष पूर्व हुए राम आदि के इतिहास को नहीं मानते हैं। वेद आदि किसी शास्त्र को नहीं मानते, इसके प्रमाण की तो बात ही दूर रह जाती है। वेद में प्रतिपादित सर्वव्यापक परमेश्वर को न मान एक स्थान विशेष पर ईश्वर को मानते हैं। अपने मत के प्रवर्तक लेखराम को ही ब्रह्मा वा परमात्मा कहते हैं।

इनके विषय में स्वामी विद्यानन्द जी ने अपने ग्रन्थ सत्यार्थ भास्कर में विस्तार से लिखा है, उसको हम यहाँ दे रहे हैं।

"ब्रह्माकुमारी मत- दादा लेखराज के नाम से कुख्यात खूबचन्द कृपलानी नामक एक अवकाश प्राप्त व्यक्ति ने अपनी कामवासनाओं की तृप्ति के लिए सिन्ध में ओम् मण्डली नाम से एक संस्था की स्थापना की थी। सबसे पहले उसने कोलकाता से मायादेवी नामक एक विधवा का अपहरण किया। उसी के माध्यम से उसने अन्य अनेक लड़कियों को अपने जाल में फंसाया। इलाहाबाद के एक साप्ताहिक के द्वारा पोल खुलने पर सन् १९३७ में लाहौर में रफीखां पी.सी.एस. की अदालत में मुकदमा चला। मायादेवी ने अपने बयान में बताया कि "गुरु जी ने हमसे कहा कि तुम जनता में जाकर कहो कि मैं गोपी हूँ और ये भगवान् कृष्ण हैं। मैं बड़ी पापिनी हूँ। मैंने कितनी कुँवारी लडकियों को गुमराह किया है। कितनी ही बहनों को उनके पतियों से दूर किया है......" (आर्य जगत् जालन्धर २३ जुलाई १९६१)। कलियुगी कृष्ण ने अदालत में क्षमा मांगी और भाग निकला। १३ अगस्त, १९४० में उसने बिहार में डेरा डाल दिया। चेले-चेलियाँ आने लगे। एक दिन एक बूढ़े हरिजन की युवा पत्नी धनिया को लेकर भाग खड़े हुए। फिर मुकदमा चला। धनिया ने अपने बयान में कहा- "इस गुरु महाराज ने हमें कहा था कि मैं आपका पति हूँ। ब्रह्माजी ने मुझे आपके लिए भेजा है।" इसी प्रकार नाना

thearyasamaj.org

प्रकार के अनैतिक कर्म करते हुए दादा लेखराम हैदराबाद (सिन्ध) में जम गये और देवियों को गोपियाँ बनाकर रासलीलाएँ रचाने लगे। रासलीला की ओर से होने वाले व्यभिचार का पता जब प्रसिद्ध विद्वान्, ओजस्वी वक्ता और समाजसेवी साधु टी.एल. वास्वानी को चला तो वे उसके विरुद्ध मैदान में कूद पड़े। इससे सामान्यत: देशभर में और विशेषत: सिन्ध में तहलका मच गया। ओम् मण्डली के काले कारनामे खुलकर सामने आने लगे। यहाँ पर भी मुकदमा चला। पटना के 'योगी' पत्र से 'सरस्वती' (भाग ३९, संख्या खण्ड ६१, मई १९३८) का यह विवरण द्रष्टव्य है- "ओम् मण्डली पर पिकेटिंग शुरू हो गई है। सी.पी.सी. की धारा १०७ के अनुसार सिटी मजिस्ट्रेट की अदालत में पिकेटिंग करवाने वालों के साथ ओम् मण्डली के संस्थापक और चार अन्य सदस्यों पर मुकदमा चल रहा है।" दादा लेखराज को कारावास का दण्ड मिला।

भारत विभाजन के बाद से ब्रह्माकुमारी मत का मुख्यालय आबू पर्वत पर है। जनवरी १९६९ में दादा लेखराज की मृत्यु के बाद से दादी के नाम से चर्चित प्रकाशमणि इस सम्प्रदाय की प्रमुख रही हैं। वर्तमान में इस संस्था या सम्प्रदाय की लगभग दो हजार से अधिक शाखाएँ संसार के अनेक देशों में स्थापित हैं। मैट्रिक तक पढ़ी प्रकाशमणि आबू से विश्वभर में फैले अपने धर्म साम्राज्य का संचालन करती रही। समस्त साधक या साधिकाएँ, प्रचारक या प्रचारिकाएँ ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारी कहाती हैं। प्रचारिकाएँ प्राय: कुमारी होती हैं। विवाहित स्त्रियाँ अपने पतियों को छोड़कर या छोड़ी जाकर इस सम्प्रदाय में साधिकाएँ बन सकती हैं। ये भी ब्रह्माकुमारी ही कहाती हैं। पुरुष, चाहे विवाहित अथवा अविवाहित, ब्रह्मकुमार ही कहाते हैं। ब्रह्माकुमारियों के वस्त्र श्वेत रेशम के होते हैं। .....प्रचारिकाएँ विशेष प्रकार का सुर्मा लगाती हैं, जो इनकी सम्मोहन शक्ति को बढ़ाने में सहायक होता है। सात दिन की साधना में ही वे साधकों को ब्रह्म का साक्षात्कार कराने का दावा करती हैं।

अनुभवी लोगों के अनुसार -

'तप्तांगारसमा नारी घृतकुम्भसमः पुमान्'

अर्थात् स्त्री जलते हुए अंगारे के समान और पुरुष घी के घड़े के समान है। दोनों को पास-पास रखना खतरे से खाली नहीं है। गीता में लिखा है-

यततो ह्यपि कौन्तये पुरुषस्य विपश्चितः।
इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः।।

अर्थात् यत्न करते हुए विद्वान् पुरुष के मन को भी इन्द्रियाँ बलपूर्वक मनमानी की ओर खींच ले जाती हैं। भर्तृहरि ने कहा है-

विश्वामित्र पाराशरप्रभृतयो वाताम्बुपर्णाशनास्तेऽपि
स्त्रीमुखपङ्कजे सुललितं दृष्ट्वैव मोहंगता।
अन्नं घृतदधिपयोयुतं भुञ्जति ये मानवा:,
तेषामिन्द्रियनिग्रहो यदि भवेद्विन्ध्यस्तरेत्सागरम्।।

अर्थात्- विश्वामित्र, पाराशर आदि महर्षि जो पत्तों, वायु और जल का ही सेवन करते थे, वे भी स्त्री के सुन्दर मुखकमल को देखते ही मुग्ध हो गये थे। फिर घी, दुग्ध, दही आदि से युक्त अन्न खाने वाले मनुष्य यदि इन्द्रियों को वश में कर लें तो विन्ध्यपर्वत समुद्र में तैरने लगे।

इसलिए भगवान् मनु ने एकान्त कमरे में भाई-बहन के भी सोने का निषेध किया है।

वस्तुत: ब्रह्माकुमारों और कुमारियों का समागम मध्यकालीन वाममार्गियों के भैरवी चक्र जैसा ही प्रतीत होता है। दादा लेखराज तो ब्रह्माकुमारियों के साथ आलिंगन करते, मुख चूमते तथा.....। भक्तों का कहना है कि ब्रह्माकुमारियाँ तो उनकी पुत्रियों के समान हैं और दादा उनके पिता के समान। जैसे बच्चे उचक कर पिता की गोद में जा बैठते हैं, वैसे ही ब्रह्माकुमारियाँ दादा लेखराज की गोद में जा बैठती थीं और वे उन्हें पिता के समान प्यार करते थे।

बिठाकर गोद में हमको बनाकर वत्स सेते हैं, जरा सी बात है।
बनाने को हमें सच्चा समर्पण माँग लेते हैं।
हमें स्वीकार कर वस्तुत: सम्मान देते हैं।
लोकलाज कुल मर्यादा का, डुबा चलें हम कूल किनारा।
हमको क्या फिर और चाहिए, अगर पा सकें प्यार तुम्हारा।।

-भगवान् आया है, पृ. ५०, ५१, ६९

इनके धर्मग्रन्थ 'सच्ची गीता' पृष्ठ ९६ पर लिखा है-

"बड़ों में भी सबसे बड़ा कौन है, जो सर्वोत्तम ज्ञान का सागर और त्रिकालदर्शी कहा जाता है। मेरे गुण सर्वोत्तम माने जाते हैं। इसलिए मुझे पुरुषोत्तम कहते हैं।"

पुरुषोत्तम शब्द की दो निरुक्तियाँ होती हैं- एक है-

'पुरुषेषु उत्तमः इति पुरुषोत्तमः।'

जो व्यक्ति परस्त्रियों के साथ रमण करता है, उन्हें अपनी गोद में बैठाता है और उनके..... उसे इन अर्थों में तो पुरुषोत्तम नहीं कहा जा सकता।

दूसरी निरुक्ति-

'पुरुषेषु ऊतस्तेषु उत्तम इति पुरुषोत्तमः'

thearyasamaj.org

के अनुसार दादा लेखराज को पुरुषोत्तम मानने में किसी को कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए।

आश्चर्य की बात है कि अपनी सभाओं और सम्मेलनों में देश-परदेश के राजनेताओं, शासकों, न्यायाधीशों, पत्रकारों, शिक्षा शास्त्रियों तक को आमन्त्रित करने वाली ब्रह्माकुमारी संस्था मूल सिद्धान्तों, दार्शनिक मान्यताओं तथा कार्यकलापों को ये अभ्यागत लोग नहीं जानते। हो सकता है, वे ब्रह्माकुमारियों के..... खिंचे चले आते हों। आज तक निश्चित रूप से यह पता नहीं चल सका कि इस संस्था के करोड़ों रुपये के बजट को पूरा करने के लिए यह अपार राशि कहाँ से आती है। कहा जाता है कि ब्रह्माकुमारियाँ ही अपने घरों को लूट कर लाती हैं। पर उतने से काम बनता समझ में नहीं आता। कुछ स्वकल्पित चित्रों और चार्टों तथा रटी-रटाई शब्दावली में अपने मन्तव्यों का परिचय देने वाली ब्रह्माकुमारियाँ और ब्रह्मकुमार राजयोग, शिव, ब्रह्मा, कृष्ण, गीता आदि की बातें तो करते हैं, परन्तु सुपठित व्यक्ति जल्दी ही भाँप जाता है कि महर्षि पतञ्जलि द्वारा प्रतिपादित राजयोग तथा व्यासरचित गीता का तो ये क, ख, ग भी नहीं जानते। ये विश्वशान्ति और चरित्र निर्माण के लिए आडम्बरपूर्ण आयोजन करते हैं, शिविर लगाते हैं, कार्यशालाएँ संचालित करते हैं, किन्तु उनमें से किसी का भी कोई प्रतिफल दिखाई नहीं देता।''

पाठक, ब्रह्माकुमारी के मूल संस्थापक के चरित्र को इस लेख से जान गये होंगे, आज के रामपाल और उस समय के लेखराज में क्या अन्तर है? आर्यसमाज सदा से ही गलत का विरोधी रहा है, आज भी है। ब्रह्माकुमारी वाले अपने मूल सिद्धान्तों के लिए आर्यसमाज से चर्चा वा शास्त्रार्थ करना चाहे, तो आर्यसमाज सदा इसके लिए तैयार है।

आपने जो इनका पत्र संकलित कर भेजा है उसी से ज्ञात हो रहा है कि ये वेद-शास्त्र के निन्दक व वेदानुकूल ईश्वर को न मानने वाले हैं।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

जो खोटे काम करने वाला पुरुष अनेक प्रकार से अपने बल को उन्नत कर सबको दु:ख देना चाहे, उसको राजा सब प्रकार से दण्ड दे। तो भी वह अपनी अत्यन्त खोटाइयों को न छोड़े तो उसको मार डाले अथवा नगर से इसको दूर निकाल बन्द रखे।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४४

पृष्ठ संख्या ४२ का शेष भाग....

८. वार्षिकोत्सव सम्पन्न- गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय, शुक्रताल, मुजफ्फरनगर, उ.प्र. का ५०वाँ वार्षिक महोत्सव ३ से ६ नवम्बर २०१४ तक धूमधाम से मनाया गया, इस शुभावसर पर गंगा स्नान मेले के कारण गुरुकुल के विशाल पण्डाल में हजारों की संख्या में स्थानीय उत्तर भारत की श्रद्धालु जनता उपस्थित हुई, विद्यालय में अनेकों सम्मेलनों के साथ-साथ यजुर्वेद पारायण महायज्ञ आयोजित किया गया। इस अवसर पर आर्यजगत् के अनेक विद्वान् स्वामी ओमानन्द, स्वामी विश्वानन्द (गुरुकुल मथुरा), साध्वी प्राची आर्या, स्वामी चन्द्रदेव (मेरठ), स्वामी सत्यवेश, स्वामी विदेह योगी, स्वामी रामप्रियदास (छत्तीसगढ़) आदि उपस्थित हुए।

वैवाहिक

९. वर चाहिये- आर्यसमाज परिवार व प्रतिष्ठित व्यवसायी परिवार की सुन्दर, संस्कारित पुत्री जन्म अक्टूबर १९९१, कद-५ फीट ३ इंच, वर्ण-गौरवर्ण, शिक्षा-बी.टेक, एम.बी.ए., निवासी राजस्थान के लिए आर्यसमाजी परिवार का वर चाहिए।-**सम्पर्क-०७०२३८५६६११**

ई-मेल - ndhswa@gmail.com

१०. वधू चाहिये- आर्यवन, रोजड़ और ऋषि उद्यान, अजमेर से जुड़े हुए युवक चिन्तन रामी, उम्र ३० साल, कद-५.९ फीट, वर्ण-गेहुंआँ, शिक्षा-एम.बी.ए., व्यापार-प्रॉपर्टी लेन-देन, निवास-जजेज बंगलो रोड, अहमदाबाद-३८००१५ (गुज.) के लिए आर्यसमाजी परिवार की, अध्यात्म में रुचि रखने वाली, वैदिक सिद्धान्तों के अनुसार जीवन जीने की इच्छुक, घरेलू कन्या चाहिए।-**सम्पर्क-०९८२४९०८०८५**

ईमेल-chintan_success1@yahoo.co.in

११. वधू चाहिये- उम्र २८ वर्ष, कद-५ फूट १० इंच, वर्ण-गेहुंआँ, शिक्षा-बी.टेक (आई.टी.) व सी.डैक हैदराबाद, नौकरी- बहुराष्ट्रीय कम्पनी में पैकेज ५ लाख रु. वार्षिक के लिए आर्यसमाजी परिवार की, अध्यात्म में रुचि रखने वाली, वैदिक सिद्धान्तों के अनुसार जीवन जीने की इच्छुक, घरेलू कन्या चाहिए।-**सम्पर्क-०९३५८१६३६२७**

चुनाव समाचार

१२. आर्यसमाज सैक्टर ३५ एवं ४३ चण्डीगढ़ के चुनाव में **प्रधाना**- श्रीमती सुदेश गुप्ता, **मन्त्री**- श्री वेदप्रकाश आर्य, **कोषाध्यक्षा**- श्रीमती सरोज बाला को चुना गया।

thearyasamaj.org

स्तुता मया वरदा वेदमाता

सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः।
अन्यो अन्यमभिहर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या।।

– अथर्ववेद ३/३०/१

वेद सबके लिये है, वेद संसार के लिए है, वेद मनुष्य के लिए है, संसार का नियम है, यहाँ सब कुछ है, सबके लिए है, परन्तु प्राप्त करने का अधिकार प्राप्त करने वाले की योग्यता पर निर्भर करता है। कभी हमें लगता है कि दुनिया में सब कुछ है तो सब के पास सब कुछ होना चाहिए परन्तु किसी के पास बहुत कुछ है और किसी के पास कुछ भी नहीं है, लगता है यह देने वाले का अन्याय है।

सब कुछ सबको क्यों नहीं मिल रहा, इससे एक बात तो सिद्ध होती है कि सब कुछ होने पर सबको सहज प्राप्त होना चाहिए जैसे एक पिता की सम्पत्ति पर सबका समान अधिकार होता है, पिता भी अपनी सम्पत्ति को समान रूप से बांट देता है। परमेश्वर भी सब जीवों का पिता है तो उसे भी अपनी सम्पत्ति सबको बराबर बांटनी चाहिए। यदि ऐसा होता तो अच्छा होता। यदि ऐसा होता पाप नहीं होता, न्याय में दण्ड और पुरस्कार दोनों आते हैं। मनुष्य जैसा व्यवहार केवल पुरस्कार होता दण्ड नहीं होता। मनुष्य के जीवन में यह न्याय सब क्षेत्रों में लागू नहीं होता। मनुष्य अपनी सम्पत्ति में तो सबको समान देता है परन्तु एक गुरु सभी परीक्षार्थियों को समान अङ्क नहीं देता, वहाँ पर वह छात्र की योग्यता के अनुसार उसे पुरस्कार और दण्ड देता है। वह किसी को उच्च श्रेणी के अंकों से उत्तीर्ण करता है तो किसी को कम अङ्क देकर अनुत्तीर्ण भी कर देता है। उसी प्रकार परमेश्वर भी हवा, पानी, शरीर आदि न्यूनतम साधन सबको देता है, इतने देता है जिसको जितनी आवश्यकता है वह उतनी मात्रा में उसे प्राप्त कर सकता है। परन्तु अधिक पाने के लिए उसे अतिरिक्त पुरुषार्थ करना ही पड़ता है। जैसे परीक्षा से पहले अध्यापक का कर्त्तव्य है वह छात्र को भली प्रकार पढ़ाये, समझाये फिर परीक्षा ले, उसी प्रकार परमेश्वर भी जिस क्षेत्र में मनुष्य को जो प्राप्त करना है, उसे किस प्रकार प्राप्त करना चाहिए उसकी विधि, उपाय बताना भी परमेश्वर का उत्तरदायित्व है। यह उत्तरदायित्व परमेश्वर ने वेद का ज्ञान देकर तथा ऋषियों को उस ज्ञान का उपदेष्टा बनाकर दिया है। इसलिए उस ज्ञान को प्राप्त कर उसको व्यवहार में लाकर अपने प्रयोजन को सिद्ध किया जा सकता है। किसी भी प्रयोजन को सिद्ध करने के लिए प्रथम प्रयोजन का मनुष्य को बोध होना चाहिए फिर प्रयोजन को सिद्ध करने वाले उपायों की भी उसे जानकारी होनी चाहिए। इसके पश्चात् उनको व्यवहार में लाना आवश्यक है तब जाकर प्रयोजन की सफलता होती है। इस प्रयोजन को सिद्ध करने के लिए एक मार्ग बना हुआ है, प्रथम हमें जो करना है उसकी जानकारी. उसके उपाय, उस पर आचरण तब उसका परिणाम। इसको शास्त्र की भाषा में स्तुति, प्रार्थना, उपासना कहें या ज्ञान, कर्म, उपासना, दोनों ही बातें एक जैसी हैं। आप दोनों त्रिक आमने-सामने रखकर देख लें, यह बात आपको सहज समझ में आ जायेगी, ज्ञान-कर्म-उपासना या स्तुति-प्रार्थना-उपासना। जैसे स्तुति का अभिप्राय जो वस्तु जैसी है उसको वैसा जानना और वैसा ही कहना स्तुति है तो, प्रार्थना का अर्थ भी कर्म है, जब दुकान में बैठ व्यापारी परमेश्वर से अधिक धन की कामना करता है तो अच्छी तरह से दुकान करना उसकी प्रार्थना का ही भाग है। जब एक किसान खेत में हल चलाता है तब वह भगवान् से अधिक अन्न की प्रार्थना ही कर रहा होता है। इस प्रकार जो परिणाम हम प्राप्त करना चाहते हैं तब उसके लिए अपेक्षित जानकारी स्तुति है, उस प्रयोजन को सिद्ध करने के लिए की गई प्रार्थना कर्म का ही भाग है और उपासना स्तुति प्रार्थना या ज्ञान कर्म से प्राप्त होने वाला यदि मात्र उपासना है। जब हम इच्छा प्रयत्न करके किसी के पास पहुँच जाते हैं फिर तो जिसके पास पहुँचते हैं उसके हो जाते हैं तो उसका सब कुछ स्वत: ही हमारा हो जाता है।

वेद में इस कारण ऋग्वेद को ज्ञान काण्ड कहते हैं, यजुर्वेद को कर्मकाण्ड कहते हैं और सामवेद को उपासना काण्ड कहते हैं। इसके सम्मिलित परिणाम के रूप में हमारे पास अथर्ववेद या विज्ञान काण्ड है। उससे हम संसार के व्यवहार सिद्ध करते हैं। इसी अथर्ववेद में जीवन के व्यापार की चर्चा है, उसी चर्चा का भाग अथर्ववेद के ये मन्त्र हैं।

क्रमशः ......

thearyasamaj.org

संस्था - समाचार

१ से १५ दिसम्बर २०१४

१. यज्ञ एवं प्रवचन- जैसा कि विदित है कि ऋषि उद्यान, आर्यजगत् के उन स्थलों में से है, जहाँ पूरे वर्ष प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ का अनुष्ठान अपरिहार्य रूप से किया जाता है। प्रात:काल यज्ञोपरान्त वेद के कुछ मन्त्रों का पाठ तथा पूर्व निर्धारित मन्त्र का महर्षि दयानन्दकृत भाष्य का स्वाध्याय किया जाता है। दोनों समय प्रवचन, स्वाध्याय आदि की व्यवस्था है इन प्रवचन, स्वाध्याय के क्रम में वेद मन्त्रों तथा ऋषिकृत ग्रन्थों पर क्रमश: विचार किया जाता है। वेदमन्त्रों के अन्तर्गत ऋग्वेद के अग्नि, इन्द्र, वरुण, मरुत्, रुद्र, उषा, विष्णु, सोम, अश्विनौ, सविता, बृहस्पति आदि देवता विषयक सूक्तों पर, विश्वामित्र-नदी संवाद (३/३३), यम-यमी संवाद (१०/१०), पुरुरवा-उर्वशी संवाद (१०-९५), सरमा-पाणि संवाद (१०/१०८), 'अस्य वामस्य' सूक्त (१/१६४), मृत्यु सूक्त (१०/१८), अक्ष सूक्त (१०/३४), ज्ञान सूक्त (१०/७१), पुरुष सूक्त (१०/९०), हिरण्यगर्भ सूक्त (१०/१२१), वाक् सूक्त (१०/१२५), नासदीय सूक्त (१०/१२९), श्रद्धा सूक्त (१०/१५०), स्त्री सूक्त (१०/१५९), अघमर्षण सूक्त (१०/१९०) संगठन सूक्त (१०/१९१) इत्यादि सूक्तों पर, यजुर्वेद के ३१वें (पुरुषाध्याय),३२वें अध्याय, ३४वें अध्याय (शिवसंकल्प), ४०वें (ईशावस्यम्) आदि का, अथर्ववेद के मेधा सूक्त (१/१), राष्ट्रसभा सूक्त (३/४), शालानिर्माण सूक्त (३/१२), सांमनस्य सूक्त (३/३०) वर्षा सूक्त (४/१५), ब्रह्मचर्य सूक्त (११/५), उच्छिष्टब्रह्म सूक्त (११/७), भूमि सूक्त (१२/१) जैसे सूक्तों/मन्त्रों पर क्रमश: विचार किया जाता है, इसके साथ-साथ योगदर्शन, सत्यार्थप्रकाशादि ग्रन्थों का स्वाध्याय भी किया जाता है।

वेद भाष्य के अन्तर्गत महर्षि दयानन्द का भाष्य देखकर आत्मा गद्गद् हो जाती है-

प्र ते अग्ने हविष्मतीमियर्म्यच्छा सुद्युम्नां रातिनीं घृताचीम्।
प्रदक्षिणिद्देवतातिमुराणः सं रातिभिर्वसुभिर्यज्ञमश्रेत्।।

-ऋग्वेद ३/१९/२

के भाष्य में महर्षि आर्यों को अकर्मण्यता को दूर भगाकर पुरुषार्थी बनकर धर्मपूर्वक अर्जित उत्तम पदार्थों को सत्पुरुषों में दान करने की प्रेरणा देते हैं। महर्षि लिखते हैं- 'मनुष्यों को चाहिए कि दिन में शयन छोड़ सांसारिक व्यवहार की सिद्धि के लिए परिश्रम कर रात्रि के समय स्वस्थतापूर्वक पञ्चदश घटिका पर्यन्त निद्रालु होवें और दिनभर पुरुषार्थ से धन आदि उत्तम पदार्थों को प्राप्त होकर सुपात्र पुरुष तथा सन्मार्ग में दान देवें।'

प्रात:काल अपने प्रवचन क्रम में डॉ. धर्मवीर जी ने अपनी प्रचार यात्रा के अनुभव सुनाएँ। गुंजोटी आर्य सम्मेलन के अनुभव सुनाते हुए आपने बताया कि यह सम्मेलन हैदराबाद सत्याग्रह में आर्यसमाज के प्रथम बलिदानी आर्यवीर वेदप्रकाश जी को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करने हेतु आयोजित किया गया था। आपने बताया कि यह उस समय की बात है जब हैदराबाद रियासत में निजाम का शासन हुआ करता था (१९३० का दशक) और निजाम ने अपने फरमानों से राज्य की हिन्दू जनता के धार्मिक कृत्यों पर रोक लगा रखी थी। हिन्दुओं को सामूहिक पूजा करना, पर्व मनाना, यहाँ तक कि मन्दिरों में घण्टे बजाने पर भी पाबन्दी लगा दी गई। निजाम के इन आततायी नियमों से त्रस्त हिन्दू जनता को इन अत्याचारों से मुक्त कराने के लिए आर्यसमाजियों ने इतिहास प्रसिद्ध आन्दोलन छेड़ा। आर्यों ने अनेकों आन्दोलन किए, वे जेल गए, यहाँ तक कि अपने प्राणों की आहुति दे डाली। इस आन्दोलन के समय आर्यों ने निजाम राज्य के गाँव-गाँव जाकर लोगों को जागरूक किया, इसके लिए गाँव-गाँव में आर्यसमाज स्थापित की, आर्यवीर दल का कार्य प्रारम्भ किया। इसी क्रम में गुंजोटी ग्राम में भी लोगों को जागरूक किया गया। गुंजोटी ग्राम की मस्जिद में (जिसके बारे में यह कहा जाता था कि यहाँ कभी मन्दिर था) में कोई बन्दर आया, तो इसके चौकीदार को इस बन्दर का शिकार करने की सूझी। उसने बन्दूक से उस बन्दर को मार दिया। बन्दर का मरना था कि हजारों की संख्या में बन्दर वहाँ इकट्ठा हो गए। बन्दर और तो क्या करते, उन्होंने उस मस्जिद को तोड़ना प्रारम्भ कर दिया। इस दौरान वहाँ से एक मूर्ति निकली। हिन्दू तो पहले से ही इसे मन्दिर बताते आए थे, उनकी बात और प्रमाणित हो गई। इधर अनिष्ठ करने की इच्छा से मुसलमान इकट्ठे होने लगे। इनको देखकर आर्यसमाज के नेतृत्व में हिन्दू भी संगठित होने लगे। हिन्दुओं के संगठन में सभी वर्ग के लोग थे सवर्ण भी, दलित भी। यहाँ युवक वेदप्रकाश आर्यवीर दल का कार्य करता था। जब यह घटना घटी तो वह किसी कारण से गाँव के बाहर गया हुआ था। शाम को जब वह वापस गाँव लौटा तो देखा कि कुछ लोग 'वैदिक धर्म की जय' के नारे

thearyasamaj.org

लगा रहे थे। युवक वेदप्रकाश उस समूह में शामिल हो गया। लेकिन ये क्या? ये तो मुसलमानों का समूह था जो छलपूर्वक नारे लगा रहा था। इन मुस्लिमों ने युवक वेदप्रकाश को घेर लिया और बड़ी निर्ममता पूर्वक उसकी हत्या कर दी, सिर को धड़ से अलग करके लटका दिया। युवक वेदप्रकाश के बलिदान से आन्दोलन और तेज हुआ और कई आर्य हुतात्माओं के अमर बलिदान से निजाम जैसे क्रूर शासक को भी झुकना पड़ा और आन्दोलन की जीत हुई। वेदप्रकाश जी व ऐसे ही गुंजोटी के अन्य वीर सपूतों को श्रद्धाञ्जलि देने के लिए उनकी जन्मभूमि गुंजोटी ता. उमरगा जि. धाराशिव (महा.) में यह उत्सव आयोजित किया गया था।

इसी प्रसंग में आपने, वर्तमान समय में महाराष्ट्र में आर्यसमाज की धुरी स्वामी श्रद्धानन्द (ये संन्यासी वर्तमान के हैं, पहले वाले मुंशीराम वाले श्रद्धानन्द नहीं हैं) जी की कार्यप्रणाली के विषय में बताया। स्वामी श्रद्धानन्द जी की इस समय अवस्था ९० वर्ष के आस-पास है। आप अपनी युवावस्था में ही प्रचार क्षेत्र में उतर चुके थे। तब से लेकर आजतक प्रचार कार्यक्रम में आप युवाओं को खासकर वे जो कॉलेज में अभी-अभी दाखिल हुए हैं, से सम्पर्क साधते हैं। उन्हें वैदिक सिद्धान्तों का परिचय कराते हैं और फिर उनसे सतत सम्पर्क बनाए रखते हैं, उनके सुख-दुःख में शामिल होते हैं। आज महाराष्ट्र में कई युवक ऐसे मिल जाएंगे जो स्वामी जी से सम्पर्क में इसलिए आए क्योंकि उनके पिता जी या उनके दादा जी का विवाह स्वामी जी ने करवाया, उन्हें वैदिक धर्म से परिचित कराया। स्वामी जी के शिष्यों में एक ओर जहाँ कुछ देश के ख्यातनाम वैज्ञानिक, आई.ए.एस., आई.पी.एस. अफसर हैं तो कुछ अध्यापक या साधारण आजीविका चलाने वाले व्यक्ति भी, लेकिन सभी में एक समानता अवश्य मिलेगी कि सभी का जीवन नशा सेवन आदि दुर्गुणों से बहुत दूर मिलेगा और उनके जीवन में सदाचार मिलेगा।

अपने प्रवचन क्रम में आचार्य सोमदेव जी ने यजुर्वेद के उन्नीसवें अध्याय के ४७ वें मन्त्र

द्वे सृतीऽअश्रृणवं पितृणामहं देवानामुत मर्त्यानाम्।
ताभ्यामिदं विश्वमेजत्समेति यदन्तरा पितरं मातरं च।।

का उद्धरण देते हुए बताया कि आत्मा की दो ही प्रकार की गति होती हैं एक माता-पिता से जन्म को प्राप्त होकर संसार में विषय-सुख को भोगना और दूसरी विद्वानों के संग आदि से मुक्ति सुख को भोगना। इसे ही कठोपनिषद् में श्रेय और प्रेय के रूप में, ईशोपनिषद् में मृत्यु और अमृत के रूप में, मुण्डकोपनिषद् में अपरा और परा के रूप में कहा गया है। श्रेयमार्ग की व्याख्या करते हुए आपने अथर्ववेद का निम्न मन्त्र उद्धृत किया-

शुक्रोऽसि भ्राजोऽसि स्वरसि ज्योतिरसि।
आप्नुहि श्रेयांसमति समं क्राम।।

- अथर्व. २/११/५

अर्थात् यह श्रेय मार्ग शुक्र है, प्रकाशशील है, ज्ञान के प्रकाश से आलोकित है। कभी-कभी हम अपना मार्ग अन्धकार/अज्ञान युक्त बना लेते हैं। अपने मुम्बई प्रचार कार्यक्रम की घटना सुनाते हुए आपने बताया कि जब आप एक फैक्ट्री में यज्ञ करवा रहे थे, तो वहाँ का एक इंजीनियर यज्ञ में आहुति नहीं दे रहा था। जब बाद में उससे इसका कारण पूछा गया तो उसने बताया कि जब पिछली बार उसने हवन किया था, आहुति दी थी तो उसके साथ अनिष्ट हो गया था अर्थात् इंजीनियर ने यज्ञ जैसे परोपकार के और पवित्र कार्य को अनिष्ट लाने वाला मान लिया। अपना मार्ग अज्ञान से युक्त कर लिया, अशुक्र कर लिया। ऐसी ही एक घटना महर्षि दयानन्द के जीवन में भी घटी। महर्षि अपने उदयपुर प्रवास के दौरान लगभग साढ़े छह माह तक निरन्तर महाराणा सज्जनसिंह को उपदेश देते रहे, मनुस्मृति आदि ग्रन्थ पढ़ाते रहे। महर्षि की प्रेरणा से जहाँ महाराणा का जीवन उत्तरोत्तर पवित्र होता गया। महाराणा ने अपने महल पर धर्म के नाम पर होने वाले आडम्बरों पर रोक लगा दी। इससे पण्डे-पुजारी महाराणा से नाराज रहने लगे। महाराणा सज्जनसिंह नियमति दोनों समय यज्ञ किया करते थे। महर्षि की मृत्यु के कुछ समय बाद १८८४ में महाराणा की भी मृत्यु हो गई। मृत्यु के समय महाराणा को कई रोग होने से बहुत अधिक शारीरिक पीड़ा थी और बहुत कष्टपूर्ण स्थिति में महाराणा का शरीर छूटा। तो जिन पण्डे-पुजारियों का महाराणा के महल में प्रवेश निषिद्ध था वे महाराणा का शरीर छूटते ही महल में आ धमके। भावी शासकों को डराया कि महाराणा का अन्तिम समय कष्टपूर्वक इसलिए बीता क्योंकि महाराणा यज्ञ करते थे। वो दिन था और आज का दिन है उदयपुर महल में हवन/यज्ञ नहीं हुआ अर्थात् व्यक्ति अपनी बुद्धि कुंठित कर लेता है, ऐसा व्यक्ति वह श्रेय मार्गी तो नहीं हो सकता क्योंकि अज्ञान, अन्धकार युक्त मार्ग श्रेय का नहीं हो सकता।

सांयकालीन प्रवचन के क्रम में मेरठ से पधारे विद्वान् माननीय सत्येन्द्रसिंह जी सत्यार्थप्रकाश का स्वाध्याय करवाते रहे। द्वितीय समुल्लास में बाल शिक्षा प्रकरण की व्याख्या करते हुए आपने बताया कि माता-पिता को चाहिए

thearyasamaj.org

कि जहाँ वे अपने बच्चों को व्यवहारिक नैतिक शिक्षा देवें वहीं भूत-प्रेतादि का मिथ्यत्त्व भी बता दें। भूत-प्रेतादि के नाम पर अज्ञानी लोग पुरुषार्थ से कमाया धन गंवाकर अनेक प्रकार के कष्ट उठाते रहते हैं। हमारे समाज की भी विचित्र स्थिति है, कुछ जातियाँ जिन्हें नीचा समझा जाता है जिनके साथ सामान्य व्यवहार तक नहीं किया जाता, भूत-प्रेतादि के प्रसंग में इन्हीं से परामर्श लेने जाया जाता है। कुछ लोग किसी कारणवश भूत-प्रेत का नाटक करते हैं। इस सन्दर्भ में आपने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन की एक घटना सुनायी। एक बार स्वामी श्रद्धानन्द प्रचार हेतु किसी गाँव में थे तो गाँव की एक महिला अपनी बहू को लेकर आई और स्वामी जी से बोली कि बहू के विवाह को तीन वर्ष हो गए, लेकिन इसका स्वास्थ्य ही ठीक नहीं रहता, मुझे अभी तक पोते-पोती के दर्शन भी नहीं हुए। स्वामी जी ने बहू से अकेले में पूछा- बेटी तू इतनी पतली क्यों है? बस स्वामी जी का पूछना था कि बहू रोने लगी, कहा स्वामी जी ये जो मेरी सास है मेरे ऊपर हर समय नजर रखती है घर का सारा काम करवाती है लेकिन खाने के लिए नाप-तौल कर देती है। तो इस प्रकार परिस्थितिवश भी लोग तरह-तरह के नाटक करने लगते हैं।

न्यूयार्क (अमेरिका) से पधारे **डॉ. सतीश प्रकाश** जी ने अपने प्रवचन के क्रम में बताया कि क्यों वे भारत आते रहते हैं। भारतीय इतिहास, उपासना पद्धति, भारतीय दर्शन और भारतीय ज्ञान-विज्ञान को जानने के लिए पहली बार १९७७ में लम्बी अवधि के लिए भारत आए। इस दौरान आपने गुरुकुल कालवा में काशिका पर्यन्त व्याकरण का अध्ययन भी किया। उनके देश की दिनचर्या, जीवन शैली और भारत के गुरुकुल की दिनचर्या, जीवनशैली कई मामलों में एक दम विपरीत थी। वहाँ व्यक्ति देर रात तक काम करता है यहाँ प्रातः ४ बजे व्यक्ति जाग जाता है। वहाँ के भोजन में मैदा, जंक फूड, डिब्बा बन्द खाना खाकर व्यक्ति दो दिन में एक बार शौचालय जाता है तो यहाँ व्यक्ति दिन में दो बार शौचालय जाता है। अस्तु, यद्यपि पिछले कई दशकों से यू.एस.ए. दुनिया का नेतृत्व करता आ रहा है लेकिन वहाँ के लोगों को भोजन करना, बोलना, कपड़े पहनना नहीं आता है। यह भारत के लोगों को आता है। महाभारत के बाद से लगातार पतन होने पर भी, इतनी विद्याएँ विस्मृत होने पर भी वर्तमान में भारत में काफी कुछ पुरातन ज्ञान-विज्ञान बचा हुआ है। आपने बताया कि भारतीय इतिहास से, वैदिक उपासना पद्धति से, भारतीय दर्शन से, भारतीय संस्कृति से प्रभावित होकर आप बार-बार भारत आते रहते हैं।

(२) डॉ. धर्मवीर जी का प्रचार कार्यक्रम- सम्पन्न कार्यक्रम- (क) १ से ६ दिसम्बर २०१४- पंचकुला आर्यसमाज के उत्सव में भाग लिया।

(ख) १३ से १४ दिसम्बर २०१४- आर्य समाज सुशान्त लोक, गुडगाँव के कार्यक्रम में मार्गदर्शन प्रदान किया।

(ग) १६ से १८ दिसम्बर २०१४- आर्य समाज जागृति विहार, मेरठ के कार्यक्रम में उद्बोधन प्रदान किया।

आगामी कार्यक्रम- (क) २३ से २५ जनवरी २०१५- गुडगाँव में मार्गदर्शन प्रदान करेंगे।

(ख) ३० जनवरी से १ फरवरी २०१५- राष्ट्रीय सहायक विद्यालय, बीकानेर में यज्ञ प्रशिक्षण शिविर में मार्गदर्शन प्रदान करेंगे।

(३) आचार्य सोमदेव जी का प्रचार कार्यक्रम- सम्पन्न कार्यक्रम - (क) १ दिसम्बर २०१४- भिवण्डी (महाराष्ट्र) में श्री राजकुमार मान्धना के गोदाम का उद्घाटन कराया।

(ख) ०५ दिसम्बर २०१४- आर्य समाज सेक्टर-७, गुड़गाँव में व्याख्यान। प्रातःकाल श्री कन्हैयालाल जी आर्य, शिवाजी नगर के यहाँ यज्ञ सम्पन्न कराया।

(ग) ६ व ७ दिसम्बर २०१४ - गुरुकुल आर्यनगर, हिसार के स्वर्ण जंयती समारोह में मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहें।

(घ) १० व ११ दिसम्बर २०१४- ग्राम मुण्डिया, टोंक (राज.) में सामवेद परायण यज्ञ सम्पन्न करवाया।

(ङ) १२ से १४ दिसम्बर २०१४- शास्त्री नगर, अजमेर में माता सरोज शर्मा के यहाँ सामवेद परायण यज्ञ सम्पन्न करवाया।

आगामी कार्यक्रम (क) १ से १५ जनवरी २०१५- दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा दिल्ली में आयोजित पाठशाला में वरिष्ठ विद्यार्थियों को सांख्य-दर्शन का अध्यापन करायेंगे।

(ख) २१ से २४ जनवरी २०१५- आर्यसमाज मॉडल टाऊन रोहतक के वार्षिकोत्सव में भाग लेगें।

(ग) २५ व २६ जनवरी २०१५- आर्यसमाज कानौंदा, झज्जर (हरि.) में यज्ञ व प्रवचन का कार्यक्रम करेंगे।

(घ) ३० से १ फरवरी २०१५ - राष्ट्रीय सहायक विद्यालय, बीकानेर में यज्ञ प्रशिक्षण शिविर में मार्गदर्शन प्रदान करेंगे। इति।।

thearyasamaj.org

आर्यजगत् के समाचार

१. वेद प्रचार सम्पन्न- आर्यसमाज, सेक्टर ६, भिलाई, छत्तीसगढ़ का ३१ दिवसीय वेद प्रचार अभियान-२०१४ के द्वितीय चरण समापन २४ नवम्बर को सम्पन्न हुआ। द्वितीय चरण में २४ परिवारों में यज्ञ एवं सत्संग का आयोजन किया गया था। इस आयोजन में टिवन सिटी भिलाई दुर्ग के विभिन्न मोहल्ले के परिवारों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। इन कार्यक्रमों में श्रद्धालुओं की उपस्थिति भी प्रशंसनीय थी। इस दौरान ख्याति प्राप्त उपदेशक आचार्य चन्द्रदेव फरुखाबाद से, आचार्य सत्यपाल मथुरा से तथा भजनोपदेशक पं. सहदेव सरस एटा से पधारे।

२. शिविर सम्पन्न- आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के तत्त्वावधान में आर्य वीर दल मुम्बई द्वारा आयोजित आवासीय आर्य वीरांगना चरित्र निर्माण शिविर २६ अक्टूबर से २ नवम्बर २०१४ तक आर्यसमाज सान्ताक्रुज के प्रांगण में रखा गया। शिविर में शारीरिक पाठ्यक्रम का संचालन द्रोणस्थली तपोवन देहरादून से आईं सुव्रती आर्या, श्रीमती वीणा चतुर्वेदी पाणिनी कन्या गुरुकुल वाराणसी एवं अंजलि गोस्वामी एवं सौरभ सिंह मुम्बई ने किया। श्रीमती जयाबेन पटेल संचालिका, आर्यवीर दल मुम्बई, संयोजिका श्रीमती सुदक्षिणा शास्त्री, सरोज गुप्ता एवं सुनीता शास्त्री का सहयोग रहा। बौद्धिकाध्यक्ष ब्र. अरुणकुमार आर्यवीर ने शिविर में बौद्धिक प्रशिक्षक के रूप में सेवाएँ दीं। शिविर में लगभग ४० कन्याओं ने भाग लिया।

३. वार्षिक सम्मेलन सम्पन्न- वैदिक दर्शन प्रतिष्ठान मुम्बई का प्रथम वार्षिक सम्मेलन १६ नवम्बर २०१४ को कच्छी कडवा पाटीदार समाज वाड़ी बोरिवली (पू.) में आयोजित किया गया, जिसमें यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य नामदेव आर्य धर्माचार्य रहे। प्रवक्ता के रूप में आचार्य शिवदत्त पाण्डेय को विशेष रूप से आमन्त्रित किया गया, श्री वीरेन्द्र मिश्रा एवं योगेश आर्य ने ओजस्वी एवं सुमधुर भजनों से श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया। गुजरात से पधारे श्री अरविन्द राणा सम्पादक अग्निपथ एवं उनकी सुपुत्री ने अपनी विशेष कला से सभी को प्रभावित किया।

४. शहीदों को श्रद्धाञ्जलि- २३ नवम्बर को आर्यसमाज जयपुर (दक्षिण) राज. में साप्ताहिक सत्संग के बाद मौन रख कर उन आर्यवीरों को श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गई जिन्होंने हरियाणा में पाखण्डी-स्वयम्भू सन्त रामपाल का भण्डाफोड़ करने में संघर्ष किया व प्राण न्यौछावर कर दिए। आर्यवीर सर्वश्री सोनू २००६ में, उदयवीर शास्त्री व सन्दीप आर्य २०१३ में शहीद हुए।

५. वार्षिकोत्सव सम्पन्न- शेरे पंजाब लाला लाजपतराय द्वारा सन् १८८६ ई. में स्थापित आर्य समाज का १२८वाँ वार्षिक उत्सव १० से १६ नवम्बर २०१४ तक धूमधाम से सम्पन्न हुआ। उत्सव में स्वामी श्रेयोनन्द विदेह यति के सान्निध्य में आसन-प्राणायाम-ध्यान-साधना शिविर में अनेक शिविरार्थियों ने आसन प्राणायाम द्वारा स्वास्थ्य लाभ व मानसिक लाभ उठाया। दि. १३ नवम्बर को रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में ७४ व्यक्तियों ने रक्तदान किया। दि. १४ नवम्बर को नगर में विशाल शोभा यात्रा निकाली गई, शोभायात्रा में गुरुकुल आर्यनगर, गुरुकुल धीरणवास, दयानन्द ब्राह्म विद्यालय, गुरुकुल कुम्भा खेड़ा के ब्रह्मचारियों व कन्या गुरुकुल पंचगामा भिवानी की कन्याओं ने भाग लिया। उत्सव में सत्यार्थप्रकाश सम्मेलन, नारी उत्थान सम्मेलन, कुरीति उन्मूलन सम्मेलन, समाज सुधार सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, लाजपतराय जी का बलिदान दिवस मनाया गया। आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी के प्रेरणादायी प्रवचन, मधुर गायक श्री दिनेशदत्त जी, बिजनौर के भजन हुए।आर्य समाज के वरिष्ठ भजनोपदेशक श्री मामचन्द जी पथिक, हरिद्वार का ५१०००/- की राशि व शॉल ओढ़ाकर अभिनन्दन भी किया गया।

६. विश्व शान्ति यज्ञ सम्पन्न- आर्यसमाज, फरीदकोट, पंजाब में दि. ३० नवम्बर २०१४ को विश्व शान्ति महायज्ञ का समापन किया गया, यह महायज्ञ २७ नवम्बर से प्रारम्भ हुआ था। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य सुनील दत्त शास्त्री जी फिरोजपुर ने तीनों दिन लगातार अपने अमृतमय वचनों व ज्ञान वर्षा के द्वारा श्रोता गणों व यजमानों को मन्त्रमुग्ध करते रहे।

७. वार्षिक उत्सव सम्पन्न- आर्यसमाज जवाहर नगर, लुधियाना का वार्षिक उत्सव २७ से ३० नवम्बर २०१४ को बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। पं. बालकृष्ण शास्त्री के ब्रह्मत्त्व में मंगलयज्ञ किया गया। उत्सव का कार्यक्रम प्रतिदिन प्रात: एवं रात्रि को चला जिसमें यज्ञ के अतिरिक्त पं. उपेन्द्र जी के मनोहर भजन एवं डॉ. देव शर्मा जी वेदालंकार के उत्तम प्रवचन हुए। इस उत्सव में आर्य कॉलेज लुधियाना के पाँच छात्रों को बी.ए. फाईनल की परीक्षा में संस्कृत विषय में अपने महाविद्यालय में प्रथम पाँच स्थान प्राप्त करने पर पारितोषिक एवं स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया।

शेष भाग पृष्ठ संख्या ३७ पर......

thearyasamaj.org

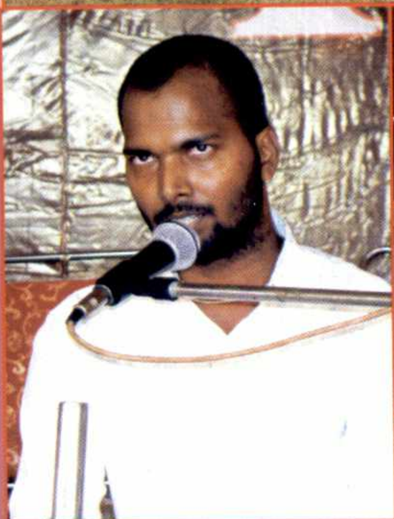

ऋषि मेले की झलकियाँ

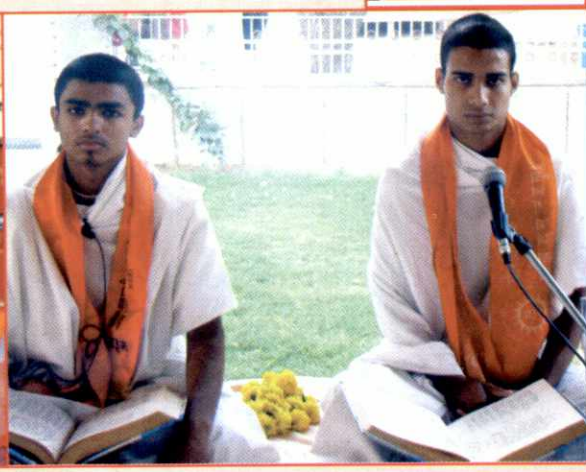

thearyasamaj.org

आर जे/ए जे/80/2015-2017 तक   प्रेषण : ३० दिसम्बर, २०१४   ३९५९/५९

ऋषि मेले की झलकियाँ

प्रेषकः
परोपकारिणी सभा
दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर
(राजस्थान) - ३०५००१

Design@ MITTAL 9829797513